# महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय,वर्धा

## बी.एड. (दूर शिक्षा)

स्व: अधिगम सामग्री

## हिन्दी शिक्षण

## दूर शिक्षा निदेशालय

**-: इकाई रचना :-**

**1.0 इकाई परिचय**

**1.1 शिक्षण के उद्देश्य**

**1.2 विषय विवेचन**

**1.2.1.भाषा का स्वरूप**

**1.2.1.1समाज में भाषा,**

**1.2.1.2भाषा और लिंग**

**1.2.1.3 भाषा और अस्मिता**

**1.2.1.4 घर की भाषा, बच्चे की भाषा, स्कूल की भाषा**

**1.2.2 संविधान और शिक्षा समितियों की सपोर्ट में भाषा**

**1.2.2.1 ताराचन्द समिति - (1948)**

**1.2.2.2 मुदलियार शिक्षा आयोग - (1952-53)**

**1.2.2.3 कोठारी आयोग - (1964-66)**

**1.2.2.4 सुनीति कुमार चटर्जी आयोग - (1956-57**

**1.2.3 वर्तमान पाठ्यचर्या में हिन्दी का स्थान**

**1.2.4 हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य**

**1.2.4.1 मातृभाषा शिक्षण का उद्देश्य**

**1.2.4.2 दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का उद्देश्य**

**1.2.5 भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त**

**1.2.5.1 अध्ययन का सिद्धान्त**

**1.2.5.2 स्वाभाविकता का सिद्धान्त**

**1.2.5.3 प्रभाव का सिद्धान्त**

**1.2.5.4 रुचि का सिद्धान्त**

**1.2.5.5 अभिप्रेरणा का सिद्धान्त**

**1.2.5.6 क्रियाशीलता का सिद्धान्त**

**1.2.5.7 जीवन समन्वय का सिद्धान्त**

**1.2.5.8 वैयान्तिक भिन्नता का सिद्धान्त**

**1.3 सारांश**

**1.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर**

**1.5 शब्दावली**

**1.6 कार्य आवंटन**

**1.7 क्रियाएँ**

**1.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)**

**1.9 संदर्भ पुस्तकें**

# इकाई 1-भाषा की भूमिका

समाज में भाषा, भाषा और लिंग, भाषा और अस्मिता, घर की भाषा, बच्चे की भाषा, स्कूल की भाषा, संविधान और शिक्षा समितियों की रिपोर्ट में भाषा, वर्तमान पाठ्यचर्या में मातृभाषा के रूप में हिंदी का स्थान, हिंदी भाषा शिक्षण के उद्देश्य, मातृभाषा शिक्षण उद्देश्य दूसरी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण का उद्देश्य, भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त, अभ्यास का सिद्धान्त, स्वाभाविकता का सिद्धान्त, प्रभाव का सिद्धान्त, रुचि का सिद्धान्त, अभिप्रेरणा का सिद्धान्त, क्रियाशीलता का सिद्धान्त, जीवन समन्वय का सिद्धान्त, वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धान्त आदि ।

## 1.0 इकाई परिचय

भाषा को अभिव्यक्ति का साधन माना जाता है . दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि भाषा मनुष्य के व्यक्तित्व से जुड़ी वह अमूल्य निधि है जिसके द्वारा उसकी समस्त व्यावहारिक चेष्टाएँ, क्रियाएँ सम्पन्न होती है. इससे यह स्पष्ट होता है कि भाषा द्वारा ही बिचारों की अभिव्यक्ति संभव है, किन्तु जहाँ तक भाषा के व्यावहारिक रूप का प्रश्न है भाषा के विविध रूप देखे जा सकते है . जिनको इस इकाई में स्पष्ट किया जा रहा है.

## 1.1शिक्षण के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे :

i. भाषा के विभिन्न रूपों का ज्ञान प्राप्त करना |
ii. भाषा की भूमिका का ज्ञान प्राप्त करना |
iii. भाषा के बारे में शिक्षा समितियों की रिपोर्टों का ज्ञान प्राप्त करना |
iv. हिंदी भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों का ज्ञान प्राप्त करना |
v. हिंदी शिक्षण का विभिन्न सिद्धान्तों की उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त करना |
vi. वर्तमान पाठ्यचर्या में हिंदी के स्थान ज्ञान का प्राप्त करना |
vii. हिंदी भाषा के महत्व के बारे में ज्ञान प्राप्त करना |

## 1.2 विषय विवेचन

### 1.2.1भाषा का स्वरूप

"अभिव्यज्यते इति भाषा"| भाषा शब्द संस्कृत की भाषा धातु से बना है इसका अर्थ है व्यक्त वाणी। अर्थात् व्यक्त रूप से जिसकी अभिव्यक्ति की जाती है उसे भाषा की संज्ञा दी जाती है। भाषा अन्त: मन से जुड़ी भावनाओं की प्रकाशिका होती है। मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति हेतु वागेन्द्रिय का सहारा लेता है तथा अभिव्यक्ति के रूप में ध्वनियाँ माध्यम का कार्य करती है। इस दृष्टि से भाषा और ध्वनि का अटूट सम्बन्ध है। भाषा और कुछ नहीं ध्वनियाँ का समूह है। मनुष्य के मस्तिष्क में पहले विचार उठते हैं फिर वही विचार ध्वनियों के सम्प्रेषण के द्वारा अभिव्यक्ति का माध्यम बनते हैं। जब हम मौखिक रूप से विचारों को व्यक्त करते हैं, तो ध्वनियों का उपयोग करते हैं| तब ध्वनियाँ अक्षरों के रूप अभिव्यक्ति का माध्यम बनती हैं। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि भाषा का मूल आधार ध्वनियाँ होती है। इस तथ्य की पुष्टि प्रसिद्ध कवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में इस प्रकार किया है-

वागर्थाविवसम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगत: पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ ।।

ध्वनि एवं अर्थ इस प्रकार जुड़े हैं जैसे "पार्वती और परमेश्वर "। अर्थात् आत्मा और शरीर के सम्बन्ध की तरह भाषा व विचारों का सम्बन्ध ध्वनि से है।

सारांशत: भाषा मनुष्य के विचारों की वाहिका है। व्यापक अर्थ में भाषा विचारों की अभिव्यक्ति अथवा संप्रेषण के लिए अपनाया जाने वाला साधन है।

1.2.1.1 **समाज में भाषा**

भाषा समाजगत प्रक्रिया है | चूँकि व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहते हुए सामाजिक सम्बन्धों को दृढ़ बनाने में भाषा उसका पूरा सहयोग देती है। बालक अपने सामाजिक वातावरण द्वारा वांछित शब्दों का चयन करते हुए विकास की ओर अग्रसर होता है | भाषा उसे व्यवहारयुक्त बनाते हुए समाज में समायोजित करने में पूर्ण सहयोग देती है इसलिए भाषा को समाज से इतर नहीं माना जा सकता। एवं भाषा बिना समाज की कल्पना भी निराधार है| न केवल सामाजिक अपितु देश का सांस्कृतिक आर्थिक, शैक्षिक विकास भी भाषा के विकास पर निर्भर करता है। इससे स्पष्ट है कि भाषा एक समाज सापेक्ष प्रक्रिया है।

1.2.1.2 **भाषा और लिंग**

भाषा एक व्यवस्था है । भाषा चाहे कोई भी हो उसका एक निश्चित क्रम होता है। व्यवस्था का आशय संकेतात्मक ध्वनियों के एक निश्चित क्रम से है। इस सन्दर्भ यह तथ्य विचारणीय है कि यह आवश्यक नहीं है | कि प्रत्येक भाषा की संरचना का स्वरूप एक हो। भाषा संरचना के स्वरूप में भी अन्तर पाया जाता है जैसे भाषा में लिंग व्यवस्था भिन्न-भिन्न भाषाओं में अलग होती है। संस्कृत में शब्दों का लिंग होता है, लेकिन क्रियापद में लिंग का प्रभाव नहीं होता है। वहीँ हिंदी भाषा में लिंगों के अनुसार प्रत्ययों एवं क्रियापदों में परिवर्तन देखा जाता है। लिंगों के आधार से वाक्य सरंचना में परिवर्तन होने वाली भाषा में लिंग ज्ञान को महत्वपूर्ण माना जाता है। संस्कृत में भी यदि कर्म वाच्य का प्रयोग किया जाता जा रहा है। कर्म पद का लिंग के अनुसार क्रिया पद का लिंग भी परिवर्तित होता है। अत: भाषाओं वाक्य रचना में कर्ता, कर्म, क्रिया की तरह लिंग का सही प्रयोग ही उच्चारण की अभिव्यक्ति को सफल बनाता है।

1.2.1.3 **भाषा और अस्मिता**

भाषा समाज की एक प्रक्रिया है। भाषा द्वारा ही समस्त क्रिया व्यापार संचालित होते हैं। अतः सामाजिक एवं सांस्कृतिक अस्मिता को अक्षुण्ण रखना भाषा का प्रमुख कार्य है। अस्मिता से जुड़ी भाषा का आशय प्राचीन संस्कृति, साहित्य, परम्पराएँ, विविध कलाओं से है जिसके द्वारा वे सुरक्षित होती हैं। जैसे-वेद, पुराण, उपनिषद, आरण्यक, रामायण, महाभारत आदि अमूल्य धरोहर गन्थों वाली संस्कृत भाषा भारत की अस्मिता है। वैसे प्रत्येक संस्कृति परम्परा साहित्य आदि अस्मिता से जुड़े तथ्व किसी न किसी भाषा से संरक्षित होते हैं। अत: भाषा अस्मिता की वाहिका है।

1.2.1.4 **घर की भाषा, बच्चे की भाषा और स्कूल की भाषा**

घर की भाषा से तात्पर्य घरों में बोली जाने वाली भाषा पर किसी प्रान्त विशेष अथवा प्रदेश विशेष का प्रभाव होता है। अर्थात् प्रान्त विशेष अथवा प्रदेशों में बोली जाने वाली भाषा घरों में बोली जाती है । भारत एक ऐसा देश है जहाँ प्रादेशिक भाषाओं का भी बाहुल्य दिखाई पड़ता है एवं प्रदेशों में प्रादेशिक भाषाओं के अलावा उपभाषाएँ भी बोली जाती हैं।
जो घर की भाषा हो सकती है।

बच्चों की निश्चित भाषा नहीं होती है। जब कि प्रारम्भिक अवस्था में बच्चे की ध्वनि केवल सांकेतिक साधनों तक ही सीमित रहती है। अर्थात् वह प्रारम्भ में विभिन्न संकेतों व ध्वनियों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति करता है जो अस्पष्ट किन्तु सार्थक होती हैं। परवर्ती अवस्था में अपने घरों में बोली जाने वाले प्रान्तीय भाषा को धीरे-धीरे आत्मसात करता है। मातृभाषा के रूप में यही भाषा होती है । जैसे कि एक व्यक्ति जिसकी मातृभाषा या घर की भाषा बांग्ला है और यदि वह उत्तरप्रदेश में निवास करता है तो निश्चित रूप से बांग्ला व हिंदी भाषा की जानकारी हो जाती है और बांग्ला एवं हिंदी के वाक्य उसकी अपनी भाषा के हो जाते हैं।

मातृभाषा व्यवहार की दृष्टि से परिष्कृत एवं बोधगम्य होती है जिसे बालक सहज अनुकरणजन्य प्रवृत्ति के कारण ग्रहण कर लेता है। अत: विद्यालयों में शिक्षा के माध्यम की भाषा प्रान्तीय भाषा यानी मातृभाषा होनी चाहिए। प्राथमिक स्तर पर विद्यालय में प्रान्त की भाषा के अलावा अन्य भाषा भी पढाई जाती है। भारत के अधिकांश राज्यों की मातृभाषा हिन्दी अथवा हिंदी सम्बन्धित भाषाएँ हैं ।

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. भाषा के विविध स्वरूपों को बताइए ?
2. घर की भाषा और स्कूल की भाषा में अंतर बताइए ?

---

## 1.2.2 शिक्षा समितियों की सपोर्ट में भाषा

शिक्षा में मातृभाषा, भाषा, विदेशी भाषा आदि भाषाओं का अपना स्थान है। बालक के स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक विकास तथा सामाजिक और राष्ट्रीय आवश्यकताओं की दृष्टि से मातृभाषा, राष्ट्रभाषा तथा संस्कृति भाषा का प्रमुख स्थान है, उच्च शिक्षा में अन्तरराष्ट्रीय भाषा या विदेशी भाषा की भी आवश्यकता पड़ती है। शिक्षा की व्यवस्था में भाषाओं का स्वाभाविक स्थान है परन्तु भारत में भाषा शिक्षा एक जटिल समस्या बनी हुई है।

इन्ही समस्याओं के बारे में विभिन्न समितियों, आयोगों तथा परिषदों ने संस्तुतियाँ दी हैं।

1.2.2.1 **ताराचन्द ताराचन्द समिति - ( 1948)**

माध्यमिक शिक्षा में सुधार हेतु इस समिति की नियुक्ति की गई। डॉ ताराचन्द की अध्यक्षता में 1948 में समिति का गठन हुआ । इसकी संस्तुतियाँ इस प्रकार थीं -

कक्षा 6 से 8 तक मातृभाषा के अतिरिक्त अंग्रेजी को कुछ समय तक अनिवार्य रखा जाए ।

माध्यमिक स्तर में मातृभाषा के अतिरिक्त अंग्रेजी को कुछ समय तक अनिवार्य रखा जाए ।

परन्तु अंग्रेजी हट जाने पर संघीय भाषा को अनिवार्य कर दिया जाए ।

1.2.2.2 **मुदालियर शिक्षा आयोग - (1952-53)**

शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा हो

पूर्व माध्यमिक स्तर पर दो भाषाओं की शिक्षा दी जाए । उसमें अंगेजी भाषा भी रहे।

उच्च माध्यमिक स्तर में दो भाषाओं की शिक्षा दी जाए ।

प्रथम भाषा- मातृभाषा / क्षेत्रीय भाषा

द्वितीय भाषा - हिंदी / अंग्रेजी / अन्य भारतीय भाषा संस्कृत भाषा

1.2.2.3 **कोठारी आयोग - (1964-66)**

कोठारी आयोग ने द्विभाषी सूत्र का संशोधन किया । इस आयोग ने तीन भाषाओं के अध्ययन को अनिवार्य करने की संस्तुति की ।

(1) प्रथम भाषा - मातृभाषा / क्षेत्रीय भाषा

द्वितीय भाषा - केन्द्र की राज भाषा / सह राज भाषा

तृतीय भाषा - भारतीय भाषा / विदेशी भाषा ( जो शिक्षा का माध्यम न हो या प्रथम तथा द्वितीय भाषा से भिन्न हो ।

1.2.2.4 **सुनीति कुमार चटर्जी आयोग - 1956-57**

प्रथम भाषा-मातृभाषा

द्वितीय भाषा-अंग्रेजी

तृतीय भाषा-संस्कृत/ हिंदी (माध्यम भिन्न भाषा)

केन्द्रीय शिक्षा सलाहाकार मंडल (1956) त्रिभाषी सूत्र के रूप में भाषा शिक्षा समस्या का समाधान प्रस्तुत किया । सन् 1957 में इस सूत्र को स्वीकृति दी और सन् 1961 में मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन में त्रिभाषा सूत्र की पुष्टि भी कर दी। इस सूत्र के अनुसार प्रत्येक भारतीय बालक के लिए तीन भाषाओं का अध्ययन करना अनिवार्य हैं :-

प्रथम - मातृभाषा / क्षेत्रीय भाषा

द्वितीय - अंग्रेजी भाषा / संस्कृत भाषा

तृतीय - हिंदी (हिन्दी से इतर अन्य भाषा भाषियों के लिये / अन्य भारतीय भाषा)

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. भाषा के बारे में विभिन्न समितियों के मत को स्पष्ट करें?
2. संविधान में भाषा के बारे में क्या कहा गया है?

---

## 1.2.3 वर्तमान पाठयचर्या में मातृभाषा के रूप में हिन्दी का

विद्यालय में शिक्षा हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम के द्वारा शिक्षक तथा छात्रों के लिए उनके कार्यो का दिशा निर्देश किया जाता है । अत: विद्यालय पाठयक्रमों में मातृभाषा को विशेष स्थान दिया जाता है।

(1) मातृभाषा की शब्दावली के माध्यम से बालक का बहुमुखी विकास होता है। बालक के भावों, संवेगों तथा मूल्यों का मातृभाषा से घनिष्ट सम्बन्ध होता है।

(2) बाल-मनो विकास का माध्यम मातृभाषा की शिक्षा है। बच्चा मातृभाषा को स्वाभाविक रूप से सीख लेता है।

(3) विद्यालय में सभी विषयों का ज्ञान तथा बोध मातृभाषा के माध्यम से कराया जाता है। मातृभाषा के माध्यम से अन्य विषयों को सीखने तथा ग्रहण करने में सरलता होती है। अत: मातृभाषा का पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान है।

(4) मातृभाषा से ही सूझबूझ की क्षमताओं का विकास होता है।

(5) मातृभाषा से शिक्षा मनौविज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित होती है। ''ज्ञात से अज्ञात'' तथा सरल से कठिन की ओर'' सूत्रों का प्रयोग किया जाता है। लेखन में पाठ्यक्रम का ज्ञान होता है और अभिव्यक्ति की क्षमता भी विकसित होती है।

अत: हिंदीभाषी राज्यों में हिन्दी का मातृभाषा के रूप में पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ है। भारत में प्राय 45 प्रतिशत लोगों के लिए हिंदी बोलचाल की भाषा है। इसके अतिरिक्त एक सम्पर्क भाषा के रूप में भी हिंदी महत्वपूर्ण है। अत: राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में माध्यम भाषा के रूप में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। फलतः हिन्दीतर भाषा भाषी राज्यों में भी पाठ्यक्रम में द्वितीय या तृतीय भाषा के रूप में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है।

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. वर्तमान पाठ्यचर्या में हिन्दी के स्थान को स्पष्ट करें ?

---

## 1.2.4 हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य

हिन्दी भाषा को मातृभाषा के रूप में भारत के अधिकांश क्षेत्रों में पढ़ाया जाता है। दक्षिण भारत तथा कुछ अन्य राज्यों में इसे दूसरी भाषा के रूप में भी पढ़ाया जाता है। भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों को ज्ञानात्मक, कौशलात्मक, सर्जनात्मक, अभिवृत्यात्मक, सौन्दर्यानुभावात्मक रूप से बांटा जाता है, वर्तमान प्रसंग में मातृभाषा के रूप में तथा दूसरी भाषा के रूप में शिक्षण के उद्देश्य पर विचार किया जाएगा।

### 1.2.4.1 मातृभाषा शिक्षण का उद्देश्य

(1) शुद्ध उच्चारण की क्षमता प्रदान करना ।

(2) विचारों को क्रमबद्ध रूप से विकसित करना ।

(3) मनोवाचन से सहजग्राह्यता की क्षमता का निर्माण करना ।

(4) शब्द भण्डार में बृद्धि करना ।

(5) अपने शब्दों से अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न करना ।

(6) कविता के सस्वर वाचन की क्षमता का निर्माण करना ।

(7) लिपि का सही ज्ञान करना ।

(8) पठन कला में निपुण बनाना ।

(9) निबन्ध, संवाद, सारांश तथा पत्र आदि लिखने की दक्षता उत्पन्न करना ।

(10) व्याकरण के नियमों से परिचित कराना ।

(11) अभिनय, अनुकरण, एवं संवाद की योग्यता उत्पन्न करना ।

(12) स्वरचित कविता तथा निबन्धादि के लिए प्रोत्साहन देना ।

(13) छात्रों में लिखित अभिव्यक्ति की शैलियों एवं विधाओं का ज्ञान कराना ।

(14) भाषा के व्यावहारिक विश्लेषण में समर्थ बनाना ।

(15) सामान्य समालोचन एवं चिन्तन की प्रवृत्ति का विकास करना ।

1.2.4.2 **दूसरी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण का उद्देश्य**

**(1)** शुद्ध, सरल, स्पष्ट एवं प्रभावशाली भाषा में अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न करना ।

**(2)** शब्दों वाक्यांशों, तथा लोकोक्तियों का ज्ञान प्राप्त करना ।

**(3)** शुद्धता एवं गति का निरन्तर विकास करते हुए वाचन का अभ्यास करना ।

**(4)** ज्ञान तथा विवेक का विकास करते हुए चरित्र निर्माण करना ।

**(5)** भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों की पहचान एवं सुधार करना ।

**(6)** भाषिक तत्वों में अन्तर तथा पारस्परिक सम्बन्ध ज्ञात करना ।

**(7)** लेखन द्वारा भावों एवं विचारों को व्यक्त करने की योग्यता का विकास करना ।

**(8)** गद्य, पद्य, नाटक तथा कहानी को पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना ।

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. मातृ भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का उद्देश्य बताइए?
2. दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का उद्देश्य बताइए?

---

## 1.2.5 भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त

भाषा शिक्षण के सिद्धान्त बालकों की स्थितियों प्रवृत्तियों, व्यक्तिगत भिन्नताओं क्षमताओं आदि के आधार पर निर्धारित होते हैं । भाषा शिक्षण में जिन सामान्य सिद्धान्तों का ध्यान रखा जाना आवश्यक है, वे निम्नलिखित हैं :-

1.2.5.1 **अभ्यास का सिद्धान्** जिस कार्य का अभ्यास जितना प्रभावी होता है, वह उतना ही स्थिर होता है। भाषा जैसे कलात्मक पक्ष के लिए अभ्यास सर्वथा आवश्यक है। अभ्यास से भाषा तीव्र गति से सुदृढ़ होती है।

1.2.5.2 **स्वाभाविकता का सिद्धान्त**

भाषा प्रवाह है। परिवेश से भाषा स्वाभाविक रूप से आ जाती है। बालक मातृभाषा को स्वाभाविक रूप से सीखता है । अन्य भाषा को भी व्यक्ति उस भाषा परिवेश में रहने पर स्वाभाविक रूप से सीख लेता है।

1.2.5.3 **प्रभाव का सिद्धान्त**

यह सिद्धान्त हर शिक्षण क्षेत्र में प्रयुक्त होता है। जैसे व्यक्ति किसी भाषा में टूटे-फूटे शब्दों में अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करता है, एवं उसे दूसरों से प्रतिक्रिया प्राप्त होती है, तब उस प्रतिक्रिया से प्रभावित हो कर व्यक्ति उस भाषा को बोलता है और भाषा सीख जाता है।

1.2.5.4 **रुचि का सिद्धान्त**

इस सिद्धान्त में रुचि का महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा के प्रति रुचि, भाषा सम्बन्धित संस्कृति, परम्परा, साहित्य के प्रति रुचि भाषा सीखने के लिए अभिप्रेरित करती है। कई व्यक्ति मातृभाषा से भिन्न कई अन्य भाषाएँ सीख लेते है।

1.2.5.5 **अभिप्रेरणा का सिद्धान्त**

भाषा शिक्षण में कई तत्व अभिप्रेरणा प्रदान करने का कार्य करते हैं जैसे वस्तु मॉडल आदि। इनके द्वारा बच्चों में जिज्ञासा उत्पन्न की जाती है, जिज्ञासा की अभिप्रेरणा बच्चे की भाषा सम्बन्धित कार्यों में प्रवृत्त करती है। अन्याक्षरी, वाद-विवाद प्रती योगिता, भाषण आदि से भाषा शिक्षण प्रेरित होता है।

1.2.5.6 **क्रियाशीलता का सिद्धान्त**

यह सिद्धान्त भाषा प्रयोग को सुदृढ बनाता है । भाषा का लिखित मौखिक कार्यों के अभ्यास से भाषा स्वाभाविक हो, सहज एवं शीघ्रग्राहय हो जाती है। अत: भाषा शिक्षण में साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन महत्वपूर्ण होता है।

1.2.5.7 **जीवन समन्वय का सिद्धान्त**

लेखन, पठन के अलावा भाषा का वास्तविक जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। अत: लेखन पठन की भाषा के अलावा व्यक्ति और कई भाषाएँ सीख लेता है, जो कर्मक्षेत्र, जीवन साधन क्षेत्रों में जीवन यापन से जुड़ी होती हैं ।

1.2.5.8 **वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धान्त**

वैयक्तिक भिन्नता भाषा शिक्षण का आधार बनता है। जैसे कई व्यक्ति कई भाषाएँ सरलता से सीख लेते हैं । शुद्ध उच्चारण, स्पष्ट लेखन, सटीक वाचन आदि क्रियाओं में वैयक्तिक भिन्नताएँ पाई जाती हैं ।

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. भाषा के वैयक्तिक भिन्नता और जीवन समन्वय सिद्धांतों का वर्णन कीजिए ।

2. भाषा के अभ्यास का सिद्धान्त और स्वाभाविकता के सिद्धान्त का उल्लेख कीजिए ?

---

## 1.3 सारांश

भाषा के विविध रूप देखे जा सकते है . वे स्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में उसके प्रयोग से बनते है. जैसा कि समाज में भाषा, भाषा और लिंग , भाषा और अस्मिता, घर की भाषा बच्चे की भाषा, स्कूल की भाषा, संविधान और विभिन्न समय में बने ताराचन्द समिति - ( 1948), मुदलियार शिक्षा आयोग - (1952-53), कोठारी आयोग - (1964-66), सुनीति कुमार चटर्जी आयोग - 1956 आदि शिक्षा समितियों ने भाषा के बारे में अपना अपना मत दिए है., वर्तमान पाठ्यचर्या में हिंदी के लिए दो स्थान हैं । एक, मातृभाषा में रूप में तथा दूसरा दूसरी भाषा के रूप में अत: हिंदी भाषा शिक्षण के उद्देश्य, मातृभाषा शिक्षण उद्देश्य एवं दूसरी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के उद्देश्य के रूप में बाँटे जा सकते है . भाषा शिक्षण के कई सिद्धान्त हो सकते हैं जैसे - अभ्यास का सिद्धान्त, स्वाभाविकता का सिद्धान्त, प्रभाव का सिद्धान्त, रुचि का सिद्धान्त, अभिप्रेरणा का सिद्धान्त, क्रियाशीलता का सिद्धान्त, जीवन समन्वय का सिद्धान्त एवं वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धान्त आदि

## 1.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच –

उत्तर- अध्याय 4.2 देखे |

## 1.5 शब्दावली

**शिक्षण सिद्धांत :**

भाषा शिक्षण में बालक की रूचियों , प्रवृतियों, व्यक्तिगत भिन्नताओं, क्षमताओं आदि को ध्यान में रखते हुए शिक्षण सिद्धांत निर्धारित किए जाते है |

**दूसरी भाषा:**

शिक्षा व्यवस्था में मातृ भाषा को प्रथम स्थान दिया गया एवं मातृ भाषा से भिन्न अन्य भाषा को दूसरी भाषा के रूप में संबोधित किया गया है|

**स्कूल की भाषा -**

विद्यालयों में पढ़ाई के माध्यमों के रूप में प्रयोग की जाने वाली भाषा ।

## 1.6 कार्य आवंटन

1) सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए |

2) सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए |

3) सामाजिक विज्ञान की विभिन्न विधियों में प्रभावी विधियों का वर्णन कीजिए |

## 1.7 क्रियाएँ

1) भाषा के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन कीजिए|

2) भाषा शिक्षण के विभिन्न सिद्धांतों का वर्णन कीजिए|

## 1.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)

1) विभिन्न समितियों की हिंदी भाषा संबंधी भूमिका स्पष्ट कीजिए |

2) अहिंदी भाषी राज्यों में हिंदी भाषा की भूमिका स्पष्ट कीजिए|

## 1.9 संदर्भ पुस्तकें


- सक्सेना, राधारानी,(2013),"नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी |
- गुप्त, मनोरमा – भाषा अधिगम, केंद्रीय हिंदी संस्थान,आगरा
- गुनानंद- हिंदी भाषा का उद्भव और विकास, विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा
- चतुर्वेदी आचार्य सीताराम- भाषा कि शिक्षा, हिंदी साहित्य कुटीर, वाराणासी
- तिवारी, भोलानाथ –हिंदी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद
- द्विवेदी, देवीशंकर – भाषा और भाषिकी, भाषा-विज्ञान-विभाग,सागर वि.वि , सागर
- पांडेय, रामाशकल –हिंदी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- चतुर्वेदी, शिखा – हिंदी शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा शास्त्र की भूमिका
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा विज्ञानं की भूमिका,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

# इकाई 2 : भाषा शिक्षण

**भाषा का आधार, दार्शनिक आधार, मनोवैज्ञानिक आधार, सामाजिक आधार, भाषा शिक्षण की प्रचलित विधियाँ, व्याकरण-अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष विधि, ढांचागत विधि, संप्रेषणात्मक विधि, व्याख्यान विधि, भारत का बहुभाषिक परिदृश्य, भारत में भाषाएँ एवं भाषा परिवार एवं भाषा के बहुभाषिकता के आयाम आदि |**

---

**-: इकाई रचना :-**

---


**2.0 इकाई परिचय**

**2.1 शिक्षण के उद्देश्य**

**2.2 विषय विवेचन**

**2.2.1भाषा का आधार**

**2.2.1.1दार्शनिक आधार**

**2.2.1.2 मनोवैज्ञानिक आधार**

**2.2.1.3 सामाजिक आधार**

**2.2.2भाषा शिक्षण की प्रचलित विधियाँ**

**2.2.2.1व्याकरण-अनुवाद विधि**

**2.2.2.2 प्रत्यक्ष विधि**

**2.2.2.3 ढांचागत विधि**

**2.2.2.4 संप्रेषणात्मक विधि**

**2.2.2.5 व्याख्यान विधि**

**2.2.3 भारत का बहुभाषिक परिदृश्य**

**2.2.3.1 भारत में भाषाएँ एवं भाषा परिवार**

**2.2.3.2 भाषा की बहुभाषिकता के आयाम**

**2.3 सारांश**

**2.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर**

**2.5 शब्दावली**

**2.6 कार्य आबंटन**

**2.7 क्रियाएँ**

**2.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)**

**2.9 संदर्भ पुस्तकें**

## 2.0 इकाई परिचय

भाषा कि एक विशेषता है की भाषा परिवर्तनशील प्रकृति के रूप में देखी जाती है। भाषा की इस परिवर्तनशीलता के कुछ आधार होते हैं जैसे कि दार्शनिक, सामाजिक और मनोविज्ञानिक आदि । भाषा शिक्षण की प्रचलित विधियों को । भारत एक बहुभाषिक राष्ट्र है । अत: भारत के बहुभाषिक परिदृश्य को भाषा परिवार के अनुसार उसके विभिन्न आयामों को इस इकाई में स्पष्ट करेंगे ।

## 2.1 शिक्षण के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे :

**i.** भाषा के विभिन्न आधारों का ज्ञान प्राप्त करना |

**ii.** भाषा शिक्षण की प्रचलित विधियों का ज्ञान प्राप्त करना |

**iii.** भारत का बहुभाषिक परिदृश्य का ज्ञान प्राप्त करना |

**iv.** भाषा परिवार का ज्ञान प्राप्त करना।

**v.** भाषा के बहुभाषिकता के आयाम का ज्ञान प्राप्त करना |

## 2.2 विषय विवेचन

### 2.2.1 भाषा का आधार

**प्रस्तावना**

भाषा अभिव्यक्ति का साधन है । विचारों के सम्प्रेषण की प्रक्रिया इसी के द्वारा सम्पन्न होती है । अभिव्यक्ति के अभाव में व्यक्ति की समस्त व्यावहारिक चेष्टाएँ पंगु सदृश हो जाती है। भाषा द्वारा ही मनुष्य अपने संवेगों, विचारों, इच्छाओं को व्यक्त करता है, फिर चाहे वह अभिव्यक्ति मौखिक रूप से हो अथवा लिखित या सांकेतिक भाषा में ।

**भाषा अर्जन और अधिगम का दार्शनिक, सामाजिक और मनोविज्ञानिक आधार**

भाषा की प्रकृति अनुकरणप्रधान होती है। अपनी अनुकरण जन्य प्रवृत्ति के कारण ही बालक शैशवावस्था से ही अपने चतुर्दिक प्रमुख भाषा को सीखता, सुनता, समझता एवं व्यवहार में लाता है। इससे स्पष्ट है कि भाषा परम्परा से प्राप्त कोई पैतृक संपत्ति नहीं होती है। आयुवृद्धि के साथ बच्चा प्रारंभ में अनुकरण द्वारा वर्णन करता है। विचार-विनिमय की इस प्रक्रिया में आधारों की भूमिका दिखाई देती है जैसे दार्शनिकी, मानसिक सामाजिक इत्यादि ।

2.2.1.1 **दार्शनिक आधार**

दार्शनिक आधार पर भाषा को ईश्वर प्रदत्त माना जाता है। शब्द को ब्रहम कहते हैं जो कभी नष्ट नहीं होता है। भर्तहरि अपने 'वाक्यपदीय' नामक ग्रन्थ में लिखते हैं नहीं होता । वाणी की उत्पत्ति मूलाधार चक्र से होती है एवं परा, पश्यन्ती, मध्यमा रुपों को अतिक्रान्त कर वैखरी वाक श्रवणगोचर होता है । ध्वनि एवं शब्द का एक रूप स्वीकार कर शब्द को ब्रहमतत्व स्वीकार किया जाता है। यह जगत, प्रक्रिया में जीवन व्यवहार के लिए भिन्न-भिन्न अर्थ में परिवर्तित होता है।

2.2.1.2 **मनोवैज्ञानिक आधार**

भाषा के मनोवैज्ञानिक आधार को मानसिक आधार को भी संज्ञा दी जा सकती है। भावों एवं विचारों का सम्बन्ध मानसिक योग्यता एवं प्रक्रिया से है। भावों एवं विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम भाषा है जिसका सम्बन्ध मनोदशा से होता है । मन में उत्पन्न क्रिया तथा प्रतिक्रिया ध्वनियों के रूप में प्रकट होती है । अर्थात् मस्तिष्क द्वारा विचारों की स्वीकृति प्राप्त करने लेने के पश्चात् ही वे अभिव्यक्ति का माध्यम बनते हैं । भाषा उत्तेजना प्रतिक्रिया-ध्वनियों की एक श्रृंखला है। वाणी के माध्यम से मानसिक ग्रन्थियों को दूसरे व्यक्तियों एवं मानसिक स्तर का बोध होता है। इसे ही भाषा मनौवैज्ञानिक आधार कहा जा सकता है।

2.2.1.3 **सामाजिक आधार**

भाषा एक क्रिया है क्योंकि सभी सामाजिक कार्यों तथा गतिविधियों में भाषा का उपयोग होता है। मानसिक सम्बन्धों का आधार भाषा ही होती है । अपनी भाषा बोलने वाले व्यक्तियों से अपनापन का अनुभव करते हैं। सामाजिक रचना एवं समाज में विचार विनिमय की आवश्यकता ने भाषा को जन्म दिया । यही कारण है कि विभिन्न स्थानों, क्षेत्रों एवं समय में उत्पन्न भाषाओं में भिन्नता एवं विविधता पाई जाती है।

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. भाषा के आधार को बताइए ?

2. भाषा के सामाजिक आधार को बताइए ?

### 2.2.2 भाषा शिक्षण की प्रचलित विधियाँ

अध्ययन अध्यापन में विधियों का बड़ा महत्व होता है। प्रत्येक विषय के शिक्षण में अपने-अपने विषय के स्वरूप एवं प्रकृति के अनुसार विधियाँ निश्चित होती हैं । भाषा-शिक्षण में कुछ विधियाँ महत्वपूर्ण मानी जाती हैं । वे निम्नवत हैं।

#### 2.2.2.1 **व्याकरण-अनुवाद विधि**

प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है। व्याकरण के आधार पर ही एक भाषा से दूसरे भाषा में अनुवाद किये जाते हैं। जैसा कि हिंदी भाषा से अन्य भाषा में एवं अन्य भाषा से हिंदी भाषा में अनुवाद के लिए हिंदी भाषा का व्याकरण ज्ञान होना अनिवार्य है। अत: इस विधि का उद्देश्य व्याकरण एवं अनुवाद सिखाना है। इस विधि से भाषा में विद्यमान नये शब्द, भाषा की संकल्पना, भाषा का स्वरूप भाषा की प्रकृति से छात्र परिचित होता है। इससे शब्दों के साथ साथ भाषा का अभ्यास किया जाता है जिससे छात्र हिंदी से दूसरी भाषा में, दूसरे भाषा से हिंदी भाषा में अनुवाद करने में समर्थ होता है, और व्याकरण ज्ञान के साथ-साथ अनुवाद कला में निपुण होता है।

**वैशिष्टय**

(1) अन्य भाषा से हिंदी भाषा में अनुवाद किया जाता है।

(2) यहाँ शिक्षण का आधार शब्द ही होता है।

(3) व्याकरण के आधार से अन्य भाषा का सम्बन्ध स्पष्ट होता है।

(4) व्याकरण के आधार से भाषा के घरकों का वर्गीकरण किया जाता है।

(5) हिंदी भाषा की व्याकरण संरचना तथा अन्य भाषाओं की व्याकरण संरचना के बीच तुलनात्मक अध्ययन होता है।

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. व्याकरण-अनुवाद विधि के स्वरूप को बताइए ?

2. व्याकरण-अनुवाद विधि के वैशिष्टय बताइए ?

---

#### 2.2.2.2 **प्रत्यक्ष विधि**

प्रत्यक्ष विधि में किसी अन्य भाषा की सहायता के बिना भाषा को सिखाया जाता है। अर्थात् किसी भाषा में उसी भाषा से सिखाने के प्रक्रिया को प्रत्यक्ष प्रणाली कहते है। अत: किसी भाषा को सिखने के लिए उसी भाषा में विचार करने योग्य वातावरण निर्माण करना इस पद्धति का मूल उद्देश्य है। विशिष्ट शब्दों का अर्थ समझने के लिए वस्तुओं का प्रदर्शन, भावुक्ता अभिनय, पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग एवं व्याख्या आदि के द्वारा प्रयत्न किए जाते है । जैसे ''आम'' इस शब्द को समझाने के लिए आम-फल'' दिखाकर अर्थ रूप बताया जाता है।

वैशिष्टय

(1) अध्यापक केवल उसी (हिंदी) भाषा का प्रयोग करता है।

(2) छात्र-अध्यापकों के बीच पारस्परिक भाषिक व्यवहार हिंदी भाषा में ही होता है।

(3) ऐसे वातावरण में लेखन पठन में साथ साथ भाषा को समझने की एवं बोलने की सहज प्रवृत्ति निर्माण होता है।

(4) इसमें अन्य भाषा की सहायता नहीं की जाती है।

(5) इस प्रणाली से शब्द-अर्थो में सहज सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

(6) इस प्रणाली से अध्यापन रोचक होता है।

(7) यह मनोवैज्ञानिक पद्धति है।

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1.प्रत्यक्ष विधि के स्वरूप को बताइए ?

2. प्रत्यक्ष विधि के वैशिष्टय बताइए ?

---

**2.2.2.3 ढांचागत विधि**

किसी भी भाषा शिक्षण में केवल शब्द समृद्धि महत्वपूर्ण नहीं है अपितु शब्द योग्य प्रकार से वाक्यों में रचित होना आवश्यक है। अत: भाषा में तक वाक्य संरचना का अवगम नहीं होता है तब तक भाषा आती है ऐसा नहीं कहा जा सकता। इस पद्धति में वर्ण, वर्णों से पर पदों से पदों का निर्माण, पदों के ज्ञान से वाक्यों का निर्माण, वाक्य में पदों का सही क्रम निर्धारण, वाक्यों का निर्माण में कारकों का निधारण, एवं आसत्ति -योग्यता-आकाश आदि वाक्य विज्ञान का ज्ञान ही ढांचागत प्रणाली का उद्देश्य है।

वैशिष्टय

(1) इस पद्धति में हिंदी भाषा में वाक्य रचना करने पर बल दिया जाता है।
(2) छात्र अपने शब्दों से वाक्य रचना करे ऐसी अपेक्षा की जाती है।
(3) छात्र के कार्य पर बल दिया जाता है।
(4) विभिन्न प्रकार की संरचनाओं का बार-बार अभ्यास किए जाता है।
(5) इस प्रणाली में लेखन व मौखिक उभय क्रियाओं को महत्व दिया जाता है ।
(6) इस प्रणाली में दोषों को त्वरित निवारण किया जाता है।
(7) यह एक मनोविज्ञानिक प्रणाली है।

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1.ढांचागत विधि विधि के स्वरूप को बताइए ?

2. ढांचागत विधि के वैशिष्टय बताइए ?

---

**2.2.2.4 संप्रेषणात्मक विधि**

भाषा शिक्षण का उद्देश्य उसी भाषा में संप्रेषणात्मक क्षमता प्राप्त करना है। इस प्रणाली में सामान्य जीवन के व्यवहारों को छात्रों को उसी भाषा के सम्प्रेषण द्वारा सिखाए जाते हैं। यह प्रणाली प्रत्यक्ष प्रणाली के अनुरुप है। प्रणाली में प्रमुखत: मौखिक संप्रेषण को महत्व दिया जाता है, पश्चात् लेखन सम्प्रेषण भी बताया जाता है। छात्रों में भाषा की लेखनात्मक तथा भाषाणात्मक सम्प्रेषण क्षमता उत्पन्न करना ही उद्देश्य है।

वैशिष्टय

(1) इस प्रणाली में समान्य जीवन के साथ समन्वय'' सिद्धान्त को अपनाया जाता है।
(2) शिक्षक हिंदी भाषा में ही संप्रेषण करता है।
(3) छात्रों की हिंदी भाषा में ही सम्प्रेषण करने के लिए प्रेरित करता है।
(4) इस प्रणाली में शिक्षक विभिन्न विषयों को उसी भाषा के माध्यम से चर्चा करता है।
(5) शिल्सयार, व्यवहार, संबोधन, पग लेखन के विभिन्न विधाओं को बताता है एवं छात्रों से उसी विधा से सम्प्रेषण करता है।
(6) इस प्रणाली में अभ्यास का अवसर अधिक होता है।
(7) यह प्रणाली मनोवैज्ञानिक है।

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1.संप्रेषणात्मक विधि के स्वरूप को बताइए ?

2. संप्रेषणात्मक विधि के वैशिष्टय बताइए?

---

2.2.2.5 **व्याख्यान विधि**

व्याख्यान विधि से छात्रों को अध्ययन में कोई असुविधा न होकर सुबोध तथा सुगम रूप से सीख सकता है |इस विधि द्वारा शिक्षक इकाई की संक्षिप्त रूपरेखा रख सकता है |समग्र विवेचन के लिए व्याख्यान विधि उपयुक्त है |व्याख्यान देते समय तैयारी के साथ शिक्षक ने विषय के प्रति रुचि तथा उत्साह प्रदर्शित करना चाहिए|व्याख्यान के साथ -साथ अतिरिक्त स्रोत कैसे उपलब्ध होंगे, इसकी जानकारी छात्रों को देना जरूरी है|विषय स्पष्टीकरण के लिए यह विधि उपयुक्त है |छात्रों को सरल तथा सुबोध बनाने के लिए शिक्षक

ने उचित प्रयास करना जरूरी है | छात्रों के समय की बचत, स्वाध्ययन, नवीन कार्य निर्धारण के लिए इस विधि का पर्याप्त उपयोग करना चाहिए | ऐतिहासिक विषय की प्रस्ताबना तथा सारांश के लिए व्याख्यान विधि महत्वपूर्ण है |

**वैशिष्टय**

1. विषय स्पष्टीकरण के लिए यह विधि उपयुक्त है |
2. छात्रों की मानसिक क्रियाएँ होती है|
3. ऐतिहासिक भाषा साहित्य की प्रस्ताबना तथा सारांश के लिए महत्वपूर्ण है |
4. छात्रों को कुशल श्रोता बनाने में काफी हद तक प्रोत्साहित कर सकते है |
5. रेडियो, टेलीविजन का पर्याप्त लाभ उठा सकते है |
6. कुशल शिक्षक अल्प समय में पाठ्यक्रम पूरा कर सकते है |
7. यह पद्धति कम व्ययशील है |
8. श्रवण क्षमता, एकाग्रता, चिंतनशक्ति, तार्किक दृष्टिकोण, शैक्षिक कुशलता विकसित होती है |
9. समस्या का तत्काल समाधान संभव है |

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. व्याख्यान विधि विधि के स्वरूप को बताइए ?
2. व्याख्यान विधि के वैशिष्टय बताइए?

---

2.2.3 **भारत का बहुभाषिक परिदृश्य**

**2.2.3.1 भारत में भाषाएँ एवं भाषा परिवार**

भारत एक बहुभाष्कि राष्ट्र है। भारत में प्रत्येक राज्यों में प्रायश: भिन्न भाषाएँ प्रचलित है, उनमें भी अपने -अपने में कई भेद पाए, जाते हैं। अधिकांश भारतीय भाषाओं की मूलभाषा संस्कृत मानी जाती है। संस्कृत यूरो-भारतीय या यूरोपिय भाषा परिवार की भाषा है। संस्कृत का भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विश्व की कई भाषाओं के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। भारोपीय भाषा परिवार को सतम एवं केंतुम ऐसे दो वर्गों में बांटा जाता है। संस्कृत केंतुम वर्ग की भाषा हैं, एवं संस्कृत भारतीय भाषाओं का मूल है। अधोलिखित रेखा चित्रों से और स्पष्ट हो पाएगा ।

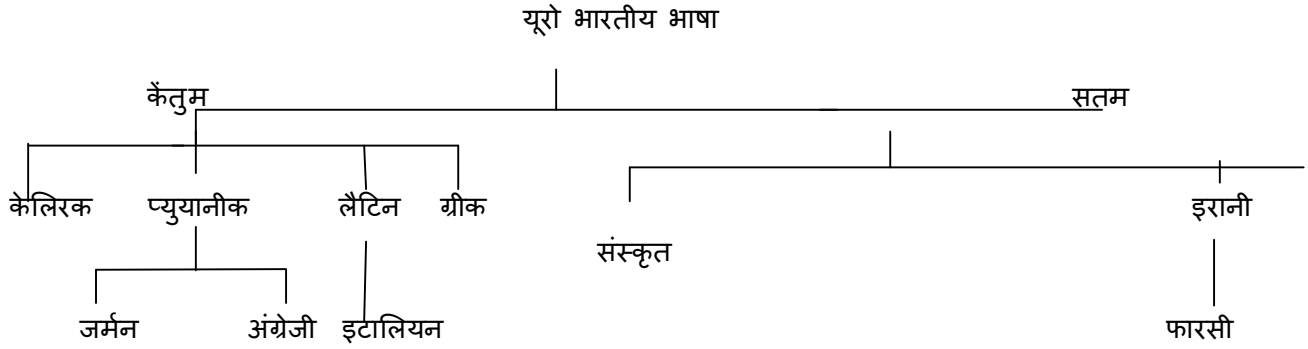


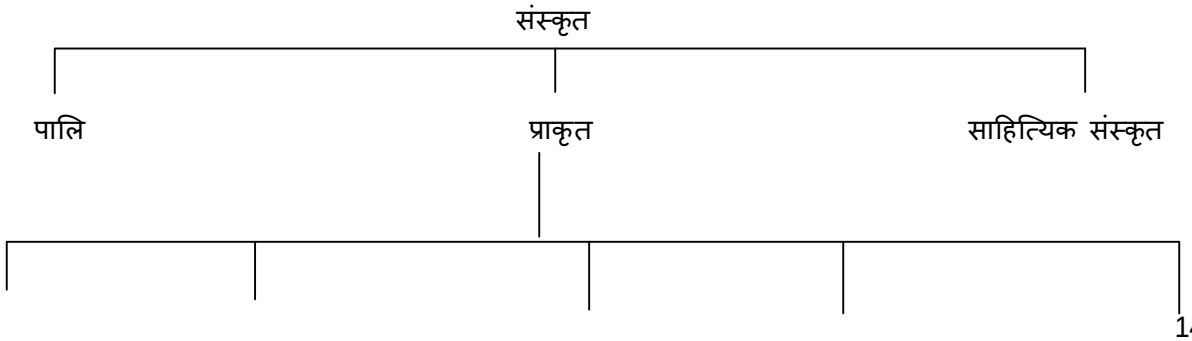

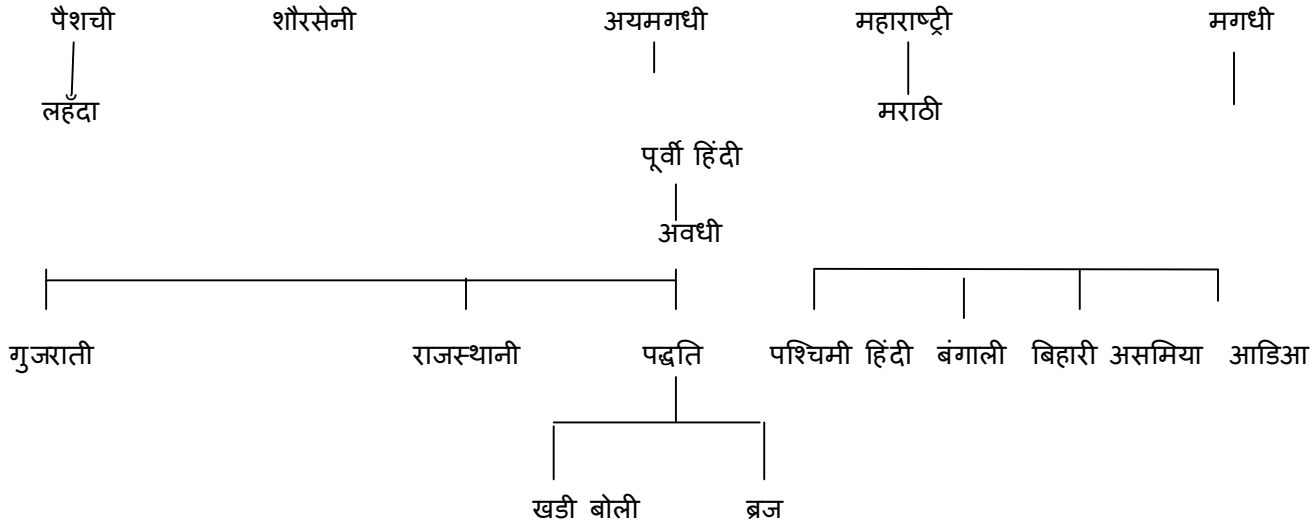


उपरोक्त चित्रों से ही भारत का बहुभाषी परिदृश्य स्पष्ट हो रहा है। रेखा चित्रों में प्रदर्शित भाषाओं से और कई भाषाएँ उत्पन्न हुई है। आज भारत में प्रचलित भाषाओं में अन्त: सम्बन्ध है। इन भाषाओं में हिंदी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। अत: भारत में इस बहुभाषिक परिदृश्य में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है।

2.2.3.2 **भाषा की बहुभाषिक्ता के आयाम**

शिक्षण की दृष्टि से बहुभाषिकता के निम्नलिखित आयाम हैं -

**बौद्धिक आयाम**

इस आयाम में भाषा को दो भागों में बांटा जा सकता है शाब्दिक तथा अशाब्दिक भाषा में अक्षर, शब्द, वाक्य एवं वाक्यों को विशिष्ट स्वरुप अन्तर्मुक्त है। वाक्य का ही श्रवण, भाषाण, पठन लेखन आदि कलाएँ होती है। अशाब्दिक भाषा में शारीरिक भाषा यानी मुख मुद्राएँ एवं संकेत आदि अन्तर्निहित होते हैं । इन सब के अर्थ बुद्धि से ही लगाए जाते है।

**भाषा का शिक्षण शास्त्रीय आयाम**

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं, किन्तु भाषा विज्ञान में हम भाषा का अध्ययन विश्लेषण करते है। अत: भाषा का शिक्षणशास्तीय विश्लेषण में भाषा को दो घटकों बांटा जाता है- भाषा और भाषा का वैज्ञानिक पक्ष । जिसमें भाषा विज्ञान, व्याकरण, भाषा कौशल आते है, जो भाषा का ज्ञानत्मक तथा क्रियात्मक, पक्ष है। भाषा तथा साहित्य कलात्मक पक्ष है। जिसमें गद्य, पद्य, नाटक, कथा, निबन्ध, आत्मकथा एवं सिखाया जा सकता है। जिनकी वैज्ञानिक जा सकता है। अत: भाषा का शिक्षण शास्त्रीय आगाम भी महत्वपूर्ण है।

**हिंदी की भूमिका**

इस बहुभाषिक एवं बहुआयामी परिदृश्य में हिंदी भाषा सर्वथा समर्थ है। बहुभाषिक परिदृश्य में हिंदी एक महत्वपूर्ण भाषा है, जो अन्य कई भाषाओं को एक साथ बांध सकती है। संस्कृत व्याकरण एवं संस्कृत साहित्य से प्रभावित हिंदी साहित्य एवं हिंदी व्याकरण उन सब विधाओं में समर्थ है जो उपरोक्त आयामों में अपेक्षित है।

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. भाषा का शिक्षण शास्त्रीय आयाम को बताइए ?
2. यूरो भारतीय भाषाओं को बताइए ?

---

## 2.3 सारांश

भाषा परम्परा से प्राप्त पैतृक संपत्ति नहीं है। आयुवृद्धि के साथबच्चा अनुकरण द्वारा अर्जन करता है। विचार विनिमय कि इस प्रक्रिया में दार्शनिक, मानसिक सामाजिक इत्यादि आधारों की भूमिका दिखाई देती है। प्रत्येक भाषा शिक्षण में अपने अपने स्वरुप एवं प्रकृति के अनुसार विधियाँ निश्चित होती हैंभाषा-शिक्षण की भी कुछ प्रचलित विधियाँ है, वे व्याकरण-अनुवाद विधि,प्रत्यक्ष विधि, ढाँचागत विधि, संप्रेषणात्मक विधि,व्याख्यान विधि आदि विधियाँ **है ।** भारत एक बहुभाषिक राष्ट्र है, इस बहुभाषिक एवं बहु-आयामी

परिदृश्य में हिंदी भाषा सर्वथा समर्थ है.भारतीय भाषाओं की मूलभाषा संस्कृत मानी जाती है। संस्कृत यूरो-भारतीय या यूरोपीय भाषा परिवार की भाषा है। संस्कृत का हिंदी भाषा के साथ-साथ विश्व की कई भाषाओं के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध है

## 2.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच –

उत्तर- अध्याय 2.2 देखे |

## 2.5 कार्य आवंटन

1) भाषा के आधारों को स्पष्ट कीजिए|

2) भाषा शिक्षण की विधियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए|

3)भाषाशिक्षण की विभिन्न विधियों में प्रभावी विधियों का वर्णन कीजिए|

## 2.7 क्रियाएँ

1) भाषा शिक्षण की विधियों की उपयोगिता का वर्णन कीजिए|

2) भारत का बहुभाषिक परिदृश्य को स्पष्ट कीजिए|

## 2.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)

1) यूरोपीय भाषा परिवार में हिंदी की भूमिका स्पष्ट कीजिए |

2) भारत में भाषाएँ एवं भाषा परिवार के आधार से हिंदी के महत्व स्पष्ट कीजिए |

## 2.9 संदर्भ पुस्तकें


- सक्सेना, राधारानी, (2013), "नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी|
- गुप्त, मनोरमा - भाषा अधिगम, केंद्रीय हिंदी संस्थान,आगरा
- गुनानंद- हिंदी भाषा का उद्भव और विकास, विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा
- चतुर्वेदी आचार्य सीताराम- भाषा कि शिक्षा, हिंदी साहित्य कुटीर, वाराणासी
- तिवारी, भोलानाथ -हिंदी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद
- द्विवेदी, देवीशंकर - भाषा और भाषिकी, भाषा-विज्ञान-विभाग,सागर वि.वि , सागर
- पांडेय, रामशकल -हिंदी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- चतुर्वेदी, शिखा - हिंदी शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ - भाषा शास्त्र की भूमिका
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ - भाषा विज्ञान की भूमिका,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

# इकाई3 : भाषा कौशलें

**श्रवणकौशल - श्रवण कौशल शिक्षण का महत्त्व : श्रवण कौशल शिक्षण के उद्देश्य श्रवण कौशल का विकास , मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का शिक्षण, मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ , मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का महत्त्व, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के उद्देश्य, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल की विकास क्रियाएँ, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल शिक्षण के विधियाँ, पठन कौशल,पठन कौशल का अर्थ, पठन कौशल शिक्षण का महत्त्व, पठन कौशल शिक्षण के उद्देश्य, पठन कौशल की विकासक क्रियाएँ, पठन कौशल शिक्षण के विधियाँ, लेखन कौशल शिक्षण,लेखन शिक्षण का महत्व, लेखन शिक्षण के उद्देश्य लेखन कौशल की विकासक क्रियाएँ, लेखन कौशल शिक्षण विधियाँ**

---

**-: इकाई रचना :-**

---

# इकाई3 : भाषा कौशलें


**3.0 इकाई परिचय**

**3.1 शिक्षण के उद्देश्य**

**3.2 विषय विवेचन**

**3.2.1श्रवणकौशल**

**3.2.1.1श्रवण कौशल अर्थ**

**3.2.1.2 श्रवण कौशल शिक्षण का महत्त्व**

**3.2.1.3 श्रवण कौशल शिक्षण के उद्देश्य**

**3.2.1.4 श्रवण कौशल की विकासक क्रियाएँ**

**3.2.1.5 श्रवण कौशल शिक्षण की विधियाँ**

**3.2.2मौखिक अभिव्यक्तिकौशल का शिक्षण**

**3.2.2.1मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ**

**3.2.2.2 मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का महत्त्व**

**3.2.2.3 मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के उद्देश्य**

**3.2.2.4 मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास की क्रियाएँ**

**3.2.2.5 मौखिक अभिव्यक्ति कौशल शिक्षण की विधियाँ**

**3.2.3 पठान कौशल**

**3.2.3.1पठन कौशल का अर्थ**

**3.2.3.2 पठन कौशल शिक्षण का महत्त्व**

**3.2.3.3 पठन कौशल शिक्षण के उद्देश्य**

**3.2.3.4 पठन कौशल की विकासक क्रियाएँ**

**3.2.3.5 पठन कौशल शिक्षण के विधियाँ**

**3.2.4 लेखन कौशल**

**3.2.4.1 लेखन कौशल का अर्थ**

**3.2.4.2 लेखन कौशल शिक्षण का महत्त्व**

**3.2.4.3 लेखन कौशल शिक्षण के उद्देश्य**

**3.2.4.4 लेखन कौशल विकास की क्रियाएँ**

**3.2.4.5लेखन कौशल शिक्षण के विधियाँ**

**3.3 सारांश**

**3.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर**

**3.5 शब्दावली**

**3.6 कार्य आवंटन**

**3.7 क्रियाएँ**

**3.8 प्रकरण अध्ययन(केस स्टडी)**

**3.9 संदर्भ पुस्तकें**

## 3.0 इकाई परिचय

भाषा अभिव्यक्ति का साधन है | अभिव्यक्ति का माध्यम कौशल होते हैं | व्यक्ति की सम्प्रेषण की सक्षमता कौशलों की दक्षता पर ही निर्भर होती है | भाषा कौशलों के उपयोग में दो सम्प्रेषण प्रवाह क्रियाशील होते हैं । यह सम्प्रेषण प्रवाह इस प्रकार हैं; बोलना-सुनना सम्प्रेषण प्रवाह तथा लिखना-पढ़ना सम्प्रेषण प्रवाह | अतः इस इकाई में भाषा के मुख्य चार कौशलों तथा उनके महत्व, उद्देश्य एवं विकास की क्रियाओं पर ध्यान दिया गया है |

## 3.1 शिक्षण के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे :

I. श्रवण कौशल का महत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना |
II. श्रवण कौशल के उद्देश्य का ज्ञान प्राप्त करना |
III. श्रवण कौशल को विकासक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करना |
IV. वाचन कौशल का महत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना |
V. वाचन कौशल के उद्देश्य का ज्ञान प्राप्त करना |
VI. वाचन कौशल की विकासक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करना
VII. पठन कौशल का महत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना |
VIII. पठन कौशल के उद्देश्य का ज्ञान प्राप्त करना |
IX. पठन कौशल का विकासक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करन ।
X. लेखन कौशल का महत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना |
XI. लेखन कौशल के उद्देश्य का ज्ञान प्राप्त करना |
XII. लेखन कौशल के विकास क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करना ।

## 3.2 विषय विवेचन

### 3.2.1 **श्रवण कौशल**

**प्रस्तावना**

**श्रवण कौशल (Listening Skill)**

वाचन सुनने और सुनकर उसका अर्थ एवं भाव समझने की क्रिया को श्रवण कौशल कहा जाता है | सामान्यत: जो ध्वनियाँ ग्रहण की जाती हैं और मस्तिष्क द्वारा उनकी अनुभूति तथा प्रत्यक्षीकरण को 'श्रवण' कहते हैं | भाषा के सन्दर्भ में अर्थबोध एवं भाव की प्रतीति, सुनने के आवश्यक तत्व होते हैं | इस प्रकार जब कोई व्यक्ति हमारे सामने अपने भाव एवं विचार मौखिक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति करता हैं और हम उसे सुनकर यथा भाव एवं विचार समझते और ग्रहण करते हैं तो हमारी यह क्रिया सुनना अथवा श्रवण कहलाती है |

**श्रवण कौशल शिक्षण का महत्त्व**

**1.** श्रवण कौशल के शिक्षण द्वारा हिंदी की स्वर और व्यंजन ध्वनियाँ, ह्रस्व-दीर्घ, अल्पप्राण-महाप्राण, अघोष-सघोष, अनुस्वार-अनुनासिक, संयुक्त व्यंजन तथा विशेष समस्यात्मक ध्वनियों का उचित अभ्यास किया जा सकता है |

2. श्रवण कौशल के माध्यम से भाषा के अन्य कौशल जैसे उच्चारण कौशल, लेखन कौशल इत्यादि प्रभावित होता है । अत: श्रवण कौशल शिक्षण अत्यंत महत्त्वपूर्ण है |

**श्रवण कौशल शिक्षण के उद्देश्य**

**1.**मौखिक भाषा सुनकर उसके अर्थ एवं भाव समझने की क्रिया में निपुण करना |

2. सुनने की क्षमता का विकास करना |

3. समस्यात्मक ध्वनियों का उचित अभ्यास कराना |

4. वाचक द्वारा अशुद्धत: उच्चरित ध्वनियों की त्रुटियाँ पकड़ने के लिये सक्षम बनाना |

5. भाषा के अन्य कौशल सीखने जैसे लेखन, वाचन, इत्यादि में निपुण करना |

**श्रवण कौशल का विकासात्मक क्रियाएँ-**

मौखिक भाषा सुनकर उसके अर्थ एवं भाव समझने के लिए आवश्यक है कि उनमें सुनने के आवश्यक तत्वों का विकास किया जाय | यह कार्य एक-दो दिन, माह अथवा वर्षों में नहीं किया जा सकता, इसके लिए सतत प्रयास की आवश्यकता होती है | इस कौशल के विकास के लिए क्रियात्मक अभ्यास जैसे -सुनो और करो, सुनो और पहचानो, देखो और सुनो कराए जा सकते हैं|

**श्रवण कौशल शिक्षण की विधियाँ**

**कहानी विधि -**

इस विधि से बालक को मनोरंजनात्मक कथाएं अभिनय के साथ सुनाई जाती हैं श्रवण के साथ साथ उसका प्रतिक्रियाएं भी ली जाती हैं

**श्रव्य उपकण प्रयोग विधि-**

इस विधि में विभिन्न श्रव्य उपकरणों को सुनने का अवसर प्रदान किया जाता है, जैसे रेडिओ, लिंग्वाफोन, टेप-रेकार्डर आदि ।

**श्रवण क्रीड़ा** -

इस विधि श्रावन सम्बंधित खेल खेले जाते है, जैसे कान में कहना, केवल मुख उच्चारण से शब्द पहचानना, आदि

**सुनो और करो विधि**-

इस विधि में सुनना और समझना इन दो क्रियाओं के बीच समन्वय की स्थापना की जाता है | बालक को विभिन्न क्रियाएँ शीघ्र शब्दों में कह संबधित क्रियाएँ करने केलिए निर्देश दिए जाता है |

**भाषाप्रयोगशाला विधि**-

इस विधि में बालक की श्रवण क्षमता का विकास करने के लिए में भाषा प्रयोगशाला का उपयोग किया जाता है |

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. श्रवण कौशल का विकासात्मक क्रियाएँ बताइए?

2. श्रवण कौशल शिक्षण की विधियाँ बताइए

---

## 3.2.2मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का शिक्षण

भाषा सीखने के लिए चार कौशल - सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखना की आवश्यकता होती है | उसमें द्वितीय कौशल को मौखिक अभिव्यक्ति का कौशल भी कहा जाता है | मानव प्रधानतः अपनी अनुभूतियों तथा मनोभावों की अभिव्यक्ति उच्चारित अथवा मौखिक भाषा में ही करता है| लिखित भाषा गौण तथा उसकी प्रतिनिधि मात्र है, क्योंकि भावों की अभिव्यक्ति का साधन साधारणतः सर्वप्रथम उच्चारित भाषा ही होती है | प्राणी जगत की यहाँ प्रवृत्ति यह है कि वह अपने भावों तथा उद्वेगों को दूसरे व्यक्ति पर प्रकट करना चाहता है, तथा दूसरों की प्रकृति, आदतें और विचारों को जानने को इच्छुक रहता है| अतः जीवन में प्रतिपल मौखिक अभिव्यक्ति की ही शरण लेनी पड़ती है | मौखिक अभिव्यक्ति के द्वारा ही मानव जीवन के सम्पूर्ण क्रियाकलापों तथा भाषा के अंगों-उपांगों का विवेचन हो जाता है, जैसे - संवाद, अभिनय, भाषण, वाद-विवाद, अन्त्याक्षरी आदि **|**

**मौखिक अभिव्यक्ति का महत्व**

1. बालक के व्यक्तित्व का विकास मौखिक अभिव्यक्ति से ही शुरू होता है |
2. मौखिक विचारों को समझाना एवं अभिव्यक्ति करना अधिक सरल देखा जाता है |
3. मौखिक अभिव्यक्ति लिखित की अपेक्षा अधिक सुविधाजनक एवं अभिव्यक्ति में सहज देखी जाती है |
4. मौखिक अभिव्यक्ति समाज के प्रत्येक वर्ग हेतु महत्वपूर्ण होती है |
5. मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा छात्रों की अनुकरण की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया जा सकता है |
6. मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर भाषागत अशुद्धिओं को दूर करने में सहायक होते है
7. मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा व्यवहार में कुशलता और उससे सामाजिक समायोजन में सहजता होती है |

**मौखिक अभिव्यक्ति के उद्देश्य**

मौखिक अभिव्यक्ति के महत्व के आधार पर इसके उद्देश्य निरर्धारित किए जा सकते हैं -

1. छात्रों में अपने भावों तथा विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना |
2. छात्रों में पूर्ण मनोयोग तथा शुद्ध उच्चारण के साथ बोलने की क्षमता विकसित करना |
3. छात्रों को नवीन शब्दावलियों से परिचित कराते हुए उन्हें व्यवहार में लाने के लिए प्रोत्साहित करना |
4. छात्रों में बड़ी एवं छोटी घटनाओं का विस्तार एवं संक्षेप करने की क्षमता का विकास करना|
5. छात्रों में उचित उतार-चढाव, से पूर्ण संभाषाण करने की कला का विकास करना |
6. मौखिक प्रकाशन के माध्यम से छात्रों में आत्मविकास की भावना विकसित करना|
7. व्यक्ति को व्यवहारकुशल एवं समाजकुशल बनाना |
8. छात्रों को अपने दैनिक व्यवहार में नवीन शब्दों का प्रयोग करना सिखाना |

**मौखिक अभिव्यक्ति के विकास को प्रोत्साहित करने वाली क्रियाएं**

**1.** स्नेह, स्वीकृति, विश्वास, प्रशंसा आदि क्रियाओं के द्वारा छात्रों की सुरक्षा-भावना को बनाए रखने का प्रयत्न करना ।

**2.** बालक के प्रश्नों को ध्यानपूर्वक सुनें तथा उसके समुचित उत्तर उपयुक्त भाषा में दे | इससे बालक का नए अनुभवों की प्राप्ति की आकांक्षा बरकरार रहेगी |

**3.** छात्रों में उतरदायित्व की भावना का विकास करना |

**4.** बालक की मौखिक अभिव्यक्ति का कभी भी हंसी न उड़ाना |

**5.** बालकों से मित्रवत व्यवहार करना जिससे उसको आत्म प्रदर्शन करने में सहजता होगी

**6.** मौखिक अभिव्यक्ति के विकास की दृष्टि से सामूहिक अनुकरण एवं क्रीडा आदि का आयोजन करना|

**मौखिक अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ**

**वार्तालाप विधि**-

इस विधि से पठित विषयों पर छोटे छोटे प्रश्नों को पूछते हुए वार्तालाप का अभ्यास कराया जाता है|

**सुनने सुनवाने की बिधि**-

इस विधि में छात्रों को मनोरंजक, शिक्षाप्रद तथा ज्ञानवर्धक सुनकर या कभी कभी उनसे सुनते हुए भी मौखिक अभिव्यक्ति के कम अवसर प्रदान किया जाता है |

**कविता वाचन विधि**-

इस विधि में विभिन्न गीतों, क्रियात्मक गीतों एवं रोचक, मधुर कविताओं को सुन्ते हुए अथवा सुनते हुए छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाता है |

**अभिनय बिधि**-

यहाँ अभिनय विधि के अंतर्गत छोटे छोटे नाटकों का मंचन किया जाता है | इसके द्वारा छात्रों को आत्म प्रकाशन का अवसर मिलता है एवं चिंतन, मनन, कल्पना आदि शक्तियों का भी विकास किया जाता है |

**प्रतियोगिता बिधि**-

वाद-विवाद, भाषाण, अन्त्याक्षरी आदि प्रतियोगिताओं द्वारा मनोरंजन के साथ मौखिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया जाता है |

**परिचर्चा बिधि** -

यह अभिव्यक्ति की एक सामूहिक विधि है | इसमें किसी एक प्रश्न के ऊपर अनेक छात्र अपना-अपना मत व्यक्त करते हैं |

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. मौखिक अभिव्यक्ति का महत्व बताइए?
2. **मौखिक अभिव्यक्ति के शिक्षण विधियों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए**

---

## 3.2.4 पठन कौशल

iBu dk"ky ,d lkí"; vkj lkFkd fpru ifd;k gA tl&tl ikBd dh nf'V "kCnk ij iMrh g og mu "kCnk dk i<r g, okfNr vFk dk xg.k djrk tkrk g A i<r le; 0;fDr dh vuHkfr;k tkxr gkrh gA og ikठ; oLr dk iln djrk g] ukiसंn djrk g rk dHkh vlger gkrkA og fopkjk dk doy xg.k gh ugh djrk ]mudh lf'V Hkh djrk g A fyfi irhdk dk igpkur हु, /ofu iतीdk d lkFk mudk lc/k tkMrk g vkj mul cu g, "kCnk] okD;k"kk vkj okD;k d 0nkjk vfHk0;Dr vFk dk xg.k djrk gA ;g ijh ifd;k iBu dgykrh gA

**iBu dk"ky dk egRo**

1 okpu e lk/kkj.k :Ik l i<u dh vi{kk "k/nrk ]Li'Vrk rFkk iHkkokRikndrk vf/kd gkrh gA

2 thou& pfj=] bfrgkl] dk0;] dgkfu;k] y[k] miU;kl] ukVd bR;kfn lkfgR; को i<dj vkuUn mBk;k tk ldrk gA

3 fo}kuk dk dFku g fd ekf[kd iBu l x| dk vk/kk vkj i| dk ijk Hkko le> e vk tkrk gA

4 d{kk f"k{k.k dh nf'V l f"k{kd d vkn"k ekf[kd iBu l d{kk e thou cuk jgrk gA

5 Ekku iBu l ckydk e Lok/;k; dju dh {kerk fodflr gkrh gA

**lkBu dk"ky d mís";**

1 Nk=k dk fyfi dk Li'V Kku djkukA

2 Nk=k e "kCn Hk.Mkj e of/n djukA

3 Nk=k dk okD; jpuk dk Kku djkukA

4 Nk=k dk fofHkUu y[ku "kfy;k l ifjfpr djkukA

5 Nk=k dk mfpr vklu e mfpr Hkko enk d lkFk i.k euk;kx l lLoj iBu dju e if"kf{kr djukA

6 Nk=k dk fyf[kr lkexh dk dnh; Hkko xg.k dju vkj leh{kk dju e if"kf{kr djukA

7 Nk=k dk dfork dk Hkko rFkk NUn d vulkj mfpr vkjkg vojkg d lkFk iBu dju e if"kf{kr djukA

8 Nk=k dh lkfgR; v/;;u e :fp mRiUu djukA

9 Nk=k e iBu lkexh dk fo"y'k.k dj mld eY;kdu dh :fp mRiUu djuk A

**iBu dk"ky fodklkRed fd;k,**

iLrkouk d ek/;e l cPpk dk fo'k; dh vkj vkdf'kr dj fy;k tk,] rc o Lo;

gh luu ] iBu vkj le>u dk i;Ru djx A

**1 mfpr iBu] vklu ,o enk**

v- iBu cBdj fd;k tk; A

c- dlh ij bl idkj cBuk pkfg, fd jh< dh gÏh lh/kh jg vkj ij 90 ifr"kr dk dk.k cukr g, yVd jgA

d- ikठ; lkexh आँखों e 35l eh dh njh ij jgA

**3 "k/n "kCnkPpkj.k %**

iBu drk dk lno "k/n mPpkj.k d lkFk iBu djuk pkfg,A

**4 cy %** iBu djr le; vko";d "kCnk ij cy nuk vko";d gkrk gA f"k{kd dk vkn"k ikB djr le; bl ij fo"k'k /;ku nuk pkfg,A

**5 /k; %** iBudrk dk lno /k; d lkFk mfpr xfr d lkFk iBu djuk pkfg,A

**lkBu dk"ky dh शिक्षण विधियाँ**

**बोलकर पढना-**

इस विधि में छात्रों को बोलकर पढ़ने के लिए कहा जाता है | इस विधि में उचित आवाज में विराम आदि चिन्हों को ध्यान रखते हुए पढने के लिए निर्देश दिया जाता है |

**मौन पठन -**

इस विधि में पुस्तक का पठन आवाज न करते हुए किया जाता है | परन्तु अर्थ अवगम के ऊपर मुख्य रूप से ध्यान दिया जाता है |

**सामूहिक पठन -**

इस विधि में किसी थी गद्यांश या पद्यांश को सामूहिक रूप से सामूहिक गति से पढ़ाया जाता है |

**अनुकरण पठन** -

इस विधि में शिक्षक के द्वारा जैसा पढ़ा गया छात्र के द्वारा वैसी ही गति, स्वर, लय विराम आदि चिन्हों को ध्यान रखते हुए पढ़ा जाता है |

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. **lkBu dk"ky d mÌ";** बताइए ?

2. **lkBu dk"ky d** शिक्षण विधियाँ बताइए ?

---

## 3.2.2 **लेखन कौशल**

भाषा के दो रूप होते है - मौखिक और लिखित जब हम इन ध्वनियों को प्रतीकों के रूप में व्यक्त करते हैं और उन्हें लिपिबद्ध करके भाषा को स्थायित्व प्रदान करते है तो भाषा का यह लिखित रुप कहलाता है | भाषा के इस लिखित रूप में शिक्षा, प्रतीकों को पहचान कर उन्हें बनने कि क्रिया अथवा ध्वनि को लिपिबद्ध कर लिखना है | लिखित अभिव्यक्ति के अनेक रूप है जिनमें पत्र लेखन, कहानी लेखन, प्रार्थना पत्र लेखन, निबन्ध-लेखन, जीवनचरित्र लेखन, आत्म कथालेखन कहानी लेखन संवाद लेखन आदि प्रमुख है | लेखन के द्वारा अपने भावों-विचारों या श्रुत-सामग्री को अपनी मातृभाषा के लिपिबद्ध चिन्हों द्वारा शुद्ध व लिखित रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता ही लेखन कौशल कहलाता है |

**लेखन शिक्षण का महत्व :**

1. लिखित भाषा मानव के विचारों के आदान-प्रदान का मूल साधन है |
2. लिखित भाषा से मौखिक भाषा स्थायी हो जाती है |
3. विश्व का ज्ञान लिखित भाषा के रुप में ही सुरक्षित रहता है |
4. लेखन बौद्धिक विकास का सर्वोत्तम साधन है |
5. लिखित भाषा के अभाव में अपने अतीत को नहीं जाना जा सकता |

**लेखन शिक्षण के उद्देश्य :**

- छात्रों को सुन्दर तथा स्पष्ट लेख लिखने का अभ्यास कराना |
- छात्रों को शुद्ध तथा व्याकरणसंगत भाषा लिखने की शिक्षा देना |
- छात्रों को शीघ्र लिखने का अभ्यास कराना |
- छात्रों में सृजनात्मक योग्यता का विकास करना |
- छात्रों को प्रसंग, परिस्थिति व भावों के अनुरूप भाषा शैली का प्रयोग करने में सक्षम बनाना |
- छात्रों को अपनी अभिव्यक्ति को तार्किक रूप से लिख कर व्यक्त करने में सक्षम बनाना |

**लेखन कौशल की विकास करने वाली क्रियाएँ :**

- बच्चों को अनुलेखन के अवसर दिए जाएँ |
- बच्चों को प्रतिलेखन के अवसर उपलब्ध करायें जाएँ |
- सुलेख पुस्तिकाएँ देकर अभ्यास कराया जाएँ |
- बच्चों से श्रुतलेख लिखवाया जाय |
- सुलेख प्रतियोगिताएँ कराई जाएँ |

**लेखन कौशल शिक्षण विधियाँ :**

- **अनुलेख विधि**-
- इस विधि में छात्र पुस्तकों से अथवा अन्य लेख से यथावत लिखने का प्रयास करते है |
- **प्रतिलेखविधि**-

इस विधि में छात्रों को पुस्तकों से देखकर लिखने के लिए दिया जाता है | इसमें छात्र पुस्तकों के गद्यांशो पद्यांशो को अपने लेखन पुस्तिका में लिखता है |

- **श्रुतलेख विधि**-

इस विधि में छात्र शिक्षक का बोलने को सुन कर लिखता है | इससे छात्र का श्रवण एवं लेखन के मध्य समन्वय स्थापित किया जाता है |

- **द्रुत लेख**-

इस विधि में लेखन गति के बारे में विशेष ध्यान दिया जाता है | इस विधि में शिक्षक श्यामपट्ट पर जितने वेग से लिखता है छात्र उसका अनुकरण करते हुए उसी वेगसे लिखते है, कभी-कभी किसी गद्यान्शों को निर्दिष्ट समय सीमा में लिखने के लिए भी दिया जाता है ।

- **सुलेख** -

सुलेख का अर्थ सुन्दर लेख अक्षरों को सुन्दर तथा सुडौल बनाने के लिए इस विधि का उपयोग किया जाता है | इस विधि में सुन्दर अक्षर, शिरोरेखा एवं शुद्ध वर्तनी प्रयोग के लिये ध्यान दिए जाते हैं | इसमें सुलेख पुस्तिका एवं शिक्षक की सहायता से छात्र लेखन का अभ्यास करता है |

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. लेखन शिक्षण के उद्देश्य बताइए ?
2. लेखन कौशल शिक्षण विधियाँ बताइए ?

---------------------------------------------------------------------------------------------------------

## 3.3 सारांश

भाषा कौशल भाषा का व्यावहारिक पक्ष है | भाषा सीखने के लिए चार कौशल - सुनना, बोलने, पढ़ने तथा लिखने की आवश्यकता होती है | जब कोई व्यक्ति हमारे सामने अपने भाव एवं विचार मौखिक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति करता हैं और हम उसे सुनकर भाव एवं विचार समझते और ग्रहण करते हैं तो हमारी यह क्रिया सुनना अथवा श्रवण कहलाती है |अपनी अनुभूतियों तथा मनोभावों की अभिव्यक्ति उच्चारित अथवा मौखिक भाषा में ही करता है| लिखित भाषा गौण तथा उसकी प्रतिनिधि मात्र है, क्योंकि भावों की अभिव्यक्ति का साधन भाषा ही होती है | fyfi irhdk dk igpkur g, /ofu ifrdk d lkFk mudk lc/k tkMrk g vkj mul cu g, “kCnk] okD;k”kk vkj okD;k d द्वारा vfHk0;Dr vFk dk xg.k djrk gA ;g ijh ifक्रि;k iBu dgykrh gAलेखन के द्वारा अपने भावों-विचारों या श्रुत-सामग्री को अपनी मातृभाषा के लिपिबद्ध चिन्हों द्वारा शुद्ध व लिखित रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता ही लेखन कौशल कहलाता है ।

## 3.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच –

उत्तर- अध्याय 3.2 देखे |

## 3.5 शब्दावली

**अनुलेख विधि**-

अनुलेख का आशय लेख का अनुकरण करते हुए अभ्यास करना |शिक्षक के द्वारा अथवा आदर्श पुस्तकों के द्वारा दिए हुआ अंश का हू-ब-हू अनुकरण करने का प्रयास करना ।

**अभिनय विधि :**

“अभिनय का अर्थ अतीत या वर्तमान की किसी स्थिति को क्रिया और जीवन देना है |इसका प्रयोग जिस विधि में किया जाता है, उस विधि को नाट्य रूपांतरण या भूमिका अभिनय विधि कहा जाता है|”

## 3.6 कार्य आवंटन

1) लेखन शिक्षण की विधियों को स्पष्ट कीजिए |

2) **iBu dk”ky fodkl kRed fd;k,** स्पष्ट कीजिए |

### 3.7 क्रियाएँ

1) श्रवण शिक्षण की विभिन्न विधियों की उपयोगिता का वर्णन कीजिए |

2) पठन शिक्षण की भाषा शिक्षण में भूमिका बताइए|

### 3.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)

1) मौखिक अभिव्यक्ति एवं पठन में अंतर बताइये|

2) भाषा शिक्षण में लेखन शिक्षण कि भूमिका स्पष्ट करें ।

### 3.9 संदर्भ पुस्तकें


- सक्सेना, राधारानी, (2013),"नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी |
- गुप्त, मनोरमा – भाषा अधिगम, केंद्रीय हिंदी संस्थान,आगरा
- गुनानंद- हिंदी भाषा का उद्भव और विकास, विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा
- चतुर्वेदी आचार्य सीताराम- भाषा कि शिक्षा, हिंदी साहित्य कुटीर, वाराणासी
- तिवारी, भोलानाथ –हिंदी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद
- द्विवेदी, देवीशंकर – भाषा और भाषिकी, भाषा-विज्ञान-विभाग,सागर वि.वि , सागर
- पांडेय, रामाशकल –हिंदी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- चतुर्वेदी, शिखा – हिंदी शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा शास्त्र की भूमिका
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा विज्ञानं की भूमिका,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली


## इकाई 4 - ikB;Øe तथा पुस्तकें

**ikB;Øe**, **ek/;fed** स्तर का **ikB;Øe**, उच्चस्तर का पाठ्यक्रम, **ikB;&iLrd rFkk ijd iLrd ikB;&iLrdk dk egRo**, **ikB;&iLrdk dh fo"k'krk,**, **ikB;&iLrdk dh leh{kk**, **fgnh e ikB; lgxkeh fØ;k,** ,**ikB; lgxkeh fØ;k** ओं का महत्व,**Hkk'kk l lEcfU/kr ikB; lgxkeh fØ;k,**, **J0;&n"; lk/kuk dk rkRi;**, **J0;&n"; lk/ku A**

# इकाई 4 - पाठ्यक्रम तथा पुस्तकें

**:-इकाई रचना -:**


**4 0.इकाई परिचय**

**4 1.शिक्षण के उद्देश्य**

**4 2.विषय विवेचन**

**42.1. ikB;Øe**

**4 1.2.1.ek/;fed स्तर का ikB;Øe**

**4 2.1.2.उच्च स्तर का पाठ्यक्रम**

**4.2.2 ikB;&iLrd rFkk ijd iLrd**

**4.2.21. ikB;&iLrdk dk egRo**

**4.2.2 2.ikB;&iLrdk dh fo"k'krk,**

**4.2.2 3.ikB;&iLrdk dh leh{kk**

**4.2.3 fgnh e ikB; lgxkeh fØ;k,**

**4.2.3 1.ikB; lgxkeh fØ;k का अर्थ**

**4.2.3 2.ikB; lgxkeh fØ;k ओं का महत्व**

**4.2.3 3.Hkk'kk l lEcfU/kr ikB; lgxkeh fØ;k,**

**4.2.4 J0;&n"; lk/ku**

**4.2.4 1.J0;&n"; lk/kuk dk rkRi;**

**4.2.4 2.भाषा में J0;&n"; lk/ku**

**4 3.सारांश**

**4 4.अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर**

**4 5.शब्दावली**

**4 6.कार्य आवंटन**

**4 7.क्रियाएँ**

**4 8.प्रकरण अध्ययन**

**4 9.संदर्भ पुस्तकें**

## 4.0 इकाई परिचय

पाठ्यक्रम शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का एक प्रभावी साधन है .शिक्षा पाठ्यक्रम पर अवलंबन होती है. अत इस अध्याय में विद्यार्थियों की रुचि एवं योग्यता के अनुसार पाठ्यक्रम की एक संक्षिप्त रूपरेखा बनाया गया है. शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यपुस्तक का महत्व सर्वविदित है. अतः पाठ्यपुस्तक के साथ साथ पाठ्य-सहगामी क्रिया एवं दृश्य श्रव्य उपकरणों का प्रकार महत्व तथा विशेषताएँ भी वताई गई हैं ।

## 4.1 शिक्षण के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे :

I. हिंदी शिक्षण का पाठ्यक्रम का विभिन्न विधायों का ज्ञान प्राप्त करना |
II. पाठ्यपुस्तक के विभिन्न गुणों का ज्ञान प्राप्त करना |
III. हिंदी शिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करना |
IV. **ikB;lgxkeh fØ;k**ओं का महत्व का ज्ञान प्राप्त करना |
V. हिंदी शिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न **JO;&n"; lk/ku** का ज्ञान प्राप्त करना
VI. हिंदी शिक्षण में **ikB;lgxkeh fØ;k**ओं का महत्व का ज्ञान प्राप्त करना |

## 4.2 विषय विवेचन

# 4.2.1 पाठ्यक्रम

प्रस्तावना

lkkB;Øe f"k{kk"kkL= ,d jkpd fo'k; gA igy ikB;Øe dk ldfpr vFk yxk;k tkrk Fkk ij vc ikB;Øe e leLr vuHkok dk lEefyr fd;k tkrk gA Nk= d{kk e ;k d{kk l ckgj] fo|ky; dh lhek d vUrxr fdlh LFky ij tk dN vuHko djrk g og lc ikB;Øe gA ikB;Øe dk ,d vko";d i{k fofHkUu fo'k;k dk v/;;u&v/;kiu Hkh gA Kku foKku d vudkud fo'k; g vkj lHkh fo'k;k dk viuk egRo gA gk ;g vo"; g fd t:jr d vulkj dN i{k vfuok;l :lk l vkj dN dk odfYid :lk l i<k;k tkrk gA vr% ikB;Øe e fdlh Hkk'kk dk D;k LFkku fn;k tk,] ikBØe d Lrjk e dlk LFkku fn;k tk, ;g fopkj.kh; gA

### 4 1.2.1.**ek/;fed** स्तर का **ikB;Øe**

vkj ek/;fed Lrj l fgnh dk LFkku ik;% nk idkj l n[kk tkrk gA ,d ekrHkk'kk d :lk e vkj nljk vU;Hkk'kk d :i eA fgnhHkk'kh in"kk e ekrHkk'kk dk ntk ,o vfgnh&Hkk'kk jkT;k e vU; Hkk'kk d :i e ntk iklr gkrk gA ijUr lkekU;r% fgnh Hkk'kk dk ek/;fed Lrj dk ikB;Øe dh leh{kk dju ij v/kkfyf[kr fp= mHkjrk gA
ekfyd rFkk Lor= Hkko idk"ku & dgkuh dguk] Li'V rFkk "k) Hkko idk"ku] 0;kdj.k nf'V l "k) mPpkj.k rFkk Li'V
**iBu&** ikB;&iLrd iBu l vkun vuHkfr] le> rFkk l{kihdj.k dh ijh{kk
**lgk;d iLrd&** iLrd i;kx dh :fp dk fodkl] ekuokpu l vFkxg.kA
**jpuk&** dYiuk lEcU/kh fucU/k y[ku] "kCnk l dFkk jpuk] lk/kkj.k i| jpuk
**x|ikB&** ogr x|k"kk dk NkV&NkV v"kk dk i<uk] mfpr] Loj y;] d lkFk okpu djuk
**i|ikB&** dfork dk lkfHku; vkjkg vojkg <x d lkFk okpu ,o pj.kk dk d.BLFk djukA
**0;kdj.k&** in okD;k d fo"y'k.k] dkjd ,o lHkh vxk dk lE;d KkuA

### 4 2.1.2. उच्च स्तर का पाठ्यक्रम

mPPk Lrj e Hkk'kk odfYid gkrh vkj ik< lh gkrh gA vr% mPPk Lrj d ikB;Øe dh vkykpuk djr g, ikB;Øe v/kkfyf[kr idkj l cu ldrk gA
ekf[kd Hkko idk"ku &0;kdj.k nf'V l "k)] iHkkokRed ,o #fpdj Hkk'kk o "kyh l viu fopkjk dk 0;Dr dj ldA
**iBu** & Li'V] iHkkoh fojkekfn fpUgk dk /;ku j[kr g, okpu] okpu d lkFk&lkFk vFk xg.k dh xfr dk fodkl A
**jpuk** & o.kukRed] fopkjkRed] dYiukRed fucU/kk dh jpuk] lHkh idkj d i=] foKkiu] lokn fy[kuk A
**0;kdj.k** & :i] dk0;jpuk] vuPNn jpuk] inokD; fo"y'k.k A
**leh{kk** & lkfgR; dh leh{kk dju d lkekU; flnkUr dk Kku iklr djukA fgnh lkfgR; d bfrgkl l lkekU; ifjp;A dFkuh midFkuk dk eY;kduA

**अपनी प्रगति की जाँच 1 –**

.1 ikB;Øe का अर्थ बताइए ?

.2 हिंदी शिक्षण के mPPkLrj d ikB;Øe dk स्पष्ट करें ?

---

## 4.2.2 ikB;&iLrd rFkk ijd iLrd

ikphu Hkkjr e ikB;&iLrd d fy, ^xUFk^ "kCn dk ipyu FkkA xUFk dk vFk g& xFkuk] ck/kuk] fu;fer <x l tkMuk Øe l j[kuk vkfnA Hkkt&i= ;k rkMi= dk vkpk; ykx viu f"k';k d le{k Øe l j[kr FkA mue chp e Nn djd fdlh /kkx l xFk Hkh nr FkA blhfy, mUg xUFk dgk dgk tkrk FkkA vxth dk ^cd* "kCn teu Hkk"kk d ^chd* (beach) "kCn l 0;Rié ekuk tkrk g] ftldk vFk g& o{kA Qklhlh Hkk"kk e Hkh bldk lEcU/k o{k dh Nky ;k r[rh ij fy[ku l gA ikB;&iLrdk dh vko";dता lk/ku :i e gh g] lk/; :i e ughA ikB;&iLrdk dk lk/; eku yu l budk jVuk ,o lEi.k f"k{kk dk fdrkch cuk nuk egRoi.k gk tkrk g] fdUr ikB;&iLrdk dk mÌ"; jVuk ugh gA budk **egRo** fuEufyf[kr g

### 4.2.21. ikB;&iLrdk dk egRo

1- ikB;&iLrdk e vud idkj dh lpuk, ,d gh LFkku ij fey tkrh g vr% lpukvk d lxg d fy, budh vko";drk gA

2- bud i;kx l ikB dk i<u vkj i<ku e lgk;rk feyrh gA

3- ifBr ikB dk iu% Lej.k dju&djku e ; lcy lk/ku gA

4- bul Kkukiktu e lgk;rk iklr gkrh gA

5- v/;kid viuh lfo/kkulkj ckydk dh ;kX;rk dk /;ku j[kr g, f"k{kk n ld] blds fy, ikB;&iLrdk dh vko";drk gA

6- Nk=k dk xg&dk; nu e bul lfo/kk gkrh gA

7- Hkk"kk ij i.k vf/kdkj iklr dju d fy, ikB;&iLrdk dk gkuk vfr vko";d gA budh vko";drk v/;kid vkj Nk=] nkuk dk gA

8- lEi.k d{kk dk ,d lkFk i<ku e ikB;&iLrd cMh mi;kxh gkrh gA budh lgk;rk l ,d v/;kid vud Nk=k dk ,d lkFk ljyrk l i<k ldrk gQA bll le; vkj "kfä dk vi0;; ugh gkrk gA

9- ckydk dh dYiuk&"kfDr dk fodflr djrk gA

10- mud Kku dh lhek dk foLrr djrk gA

11- mue Lok/;k; d ifr :fp dk mRiUu djrk gA

### 4.. .22 2. ikB;&iLrdk dh fo"k'krkएँ

,d vPNh ikB;&iLrdk dh dN fo"k'krk, gkrh g] o gh fo"k'krk, mld x.k dk fu/kj.k djrh gA ikB;&iLrdk d x.k dk ge e[; :i l nk nf'V;k l n[k ldr gA bUg iLrdk d x.kk d nk :i Hkh dgk tkrk gA ; g &

**1 vkHयाUrfjd]**

**2 ckáA**

vkHयाUrfjd x.k iLrd d o Hkhrjh x.k g tk mldh Hkk"kk] "kyh] ikB;&fo'k; vkfn dh nf'V l gkr gA cká x.kk e iLrd dk vkoj.k] en.k] lkTk&lजा vkfn gkr gA

**ikB;&iLrdk d e[; x.k fuEufyf[kr g &**

1½ **lकै;rk** & iR;d ikB;&iLrd dh jpuk dN mÌ";k dk /;ku e j[kdj dh tkuh pkfg,A iLrd e bu mÌ";k dk ijk dju dh ij.kk fo|eku gkuh pkfg,A Hkk"kk dh ikB;&iLrd dk mÌ";&Hkxky vkj foKku dk Kku nuk ugh gkrkA vr% ,l fo'k;k ij vk/kkfjr ikBk dk mÌ"; doy tkudkjh inku djuk u gkdj Hkk"kk&Kku c<kuk gA vr% ikBk dk Hkk"kk&Kku of) dk mÌ"; ijk djuk pkfg,A

2½ **mi;ärk** & eukoKkfud] nf'V l ekuo&0;fDrRo d fodkl dh db voLFkk, g( tl &ckY;koLFkk] fd"kkjkoLFkk] ik<koLFkk vkfnA bu voLFkkvk dh lkekU; iofÙk;k d vudy fo'k;k ij vk/kkfjr ikB mi;Dr gkr gA

3½ **fo'k;&fofo/krk &** ,d gh idkj d fo'k; ij vk/kkfjr vud ikBk dh vi{kk vud fo'k;k ij vkf/kkfjr ikB vPN gkr gA bl idkj lkfgR; dh fofHké fo/kkvk dk iLrd e ifrfuf/kRo gkuk pkfg,A x|] i|] ukVd dgkuh] fucU/k vkfn lHkh fo'k;k ij ikB gku pkfg,A

4½ **jkpdrk &** ftu fo'k;k e Nk=k dh #fp gkrh g] mud v/;;u e o Åcr ugh

vkj mUg "kh?k le> yr gA #fp dk fl)kr vkt dk ,d eukoKkfud rF; g vkj bl fl)kr dk f"k{kk d iR;d {k= e 0;oâr fd;k tkuk pkfg,A

5½ **thou l lEc)rk** ikB;&iLrd e vk; g, fo'k; thou l lEcfU/kr gku pkfg,A thou l vlECk) fo'k;k dk lh[ku e Nk=k dk dfBukb gkrh gA

6½ **Øec)rk** ikB;&iLrdk d ikB Øec) gku pkfg,A ;g Øe Nk=k dh vk; d vulkj gkuk pkfg, rFkk fo'k;k dk ^ljy l dfBu dh vkj* d fl)kr d vk/kkj ij 0;ofLFkr djuk pkfg,A

7½ **vkn"kokfnrk** ikB;&iLrd e dN ikB ,l gk tk fo|kFkh dk u;k lUn"kj u;h ij.kk ,o u; vkn"k inku dju e l{ke gkA

8½ **0;kogkfjd** dN ikB ,l Hkh gku pkfg, tk ckyd dh 0;kogkfjd cf) dk fodflr dj ld vkj ml ykdkpkj dh f"k{kk n ldA

9½ **Lrjkudyrk** ikB;&iLrdk dh Hkk'kk Nk=k d vudy gkuh pkfg,A ikjfEHkd d{kkvk e budh Hkk'kk cgr ljy gk vkj "ku% "kUkh 0;oLFkkulkj Hkk'kk d Lrj dk c<k;k tk;A

10½ **"k)rk** Hkk'kk dh nf'V l ikB;&iLrdk dk "k) gkuk pkfg,A ;fn iLrd dh gh Hkk'kk v"k) g rk ;g vk"kk dl dh tk ldrh g fd Nk= mUg i<dj Hkk'kk ij vf/kdkj dj ldxA

11½ **lkFkdrk** ikB;&iLrd dk iR;d "kCn lkFkd gk] iR;d okD; rFkk iR;d vuPNn lkFkd gkA ,lk u gk fd "kCn] okD; vkj vuPNn vuko";d :i l Bl fn; x; gkA vuko";d "kCnk ;k okD;k dk iLrd e LFkku ugh feyuk pkfg,A

12½ **llEc)rk** ikB e iR;d okD; nlj okD; l lEcfU/kr gkuk pkfg,A ,d vuPNn dk nlj vuPNn l lEcU/k gkuk pkfg,A ,d vuPNn d vUnj fofHké okD; ,d&nlj l lEc) gku pkfg,A

13½ **Hkk'kkf/kdkj lEc/ku** ikB&iLrdk dh Hkk'kk ,lh gkuh pkfg, fd Nk=k d "kCn&Hk.Mkj e of) gk vkj mudk Hkk'kk ij vf/kdkj c< ldA

14½ **ekfydrk** ikB;&iLrd d ikBk e ekfydrk dk fNé&fHké ugh fd;k tkuk pkfg,A dHkh&dHkh v/;kid ldyu djr le; y[kd d ey y[k dk NkVk dj nr g vkj y[k dk bl idkj ekfydrkfoghu dj nr g] ,lk ugh gkuk pkfg,A tk ikB u, fy[k tk;] mue vfHkO;fDr dh uohurk cuh jguh pkfg,A

15½ **"kyhxr fofo/krk** iR;d ikB&iLrd e fofHké lkfgfR;d fo/kk, rk gkuh gh pkfg,] fdUr mu ikBk e Jxkj] gkL;] d#.k] jkn] Hk;kud] ohj] "kkUr] vkfn fofo/k jlk dh dfork, gk vkj nkgk] pkikb] dfoYk] lo;] in] rdkUr&vrdkUr vkfn fofo/k NUn Hkh gku pkfg,A

16½ **uke** ikB;&iLrd d cká x.kk e mld uke dk Hkh iHkko iMrk gA iLrd dk uke ljy] lf{kIr] Li'V ,o vkd'kd gkuk pkfg,A ml fo'k; dk Hkh fdfpr vkHkkl fey tkuk pkfg,A

17½ **vkdkj** ikB;&iLrd e ikBk dk vkdkj cgr NkVk ;k cMk u jgA bl idkj lEi.k iLrd dk vkdkj Hkh u cgr NkVk jg] u cMkA NkVh d{kkvk e i'B l[;k de jg] fdUr cMh d{kkvk e ;g l[;k /khj&/khj c<rh tkuh pkfg,A

18½ **dkxt** dkxt cgr iryk u gk vkj ,lk u gk ft ldh ped vk[kk ij iMA ;g bruk ijkuk Hkh u gk fd "kh?k QV tk; vkj Nk= dk o'k e nk ckj ub fdrkc [kjhnuh iMA NkVh d{kkvk e cM vkdkj d dkxt dh ikB;&iLrd gk ldrh gA

19½ **en.k** iLrd dh Nikb "k) gkuh pkfg,A v{kj cgr NkV u gkA ikjfEHkd d{kkvk e ekV v{kjk e Nikb gk vkj /khj&/khj Åij dh d{kkvk e v{kj ckjhd gk ldr gA vH;klkFk fn; i"uk d v{kj ey ikB d v{kj l fHké gkA "kh'kdk d fy, fy, Hkh vyx Vkbi d v{kj gkA "kCnk d chp dh njh ,d okD; l nlj okD; dh njh] vuPNn&;ktuk vkfn ij Hkh /;ku jgA

20½ **fp=** fp=k l fo'k; Li'V gk tkr gA iLrd dh mi;kfxrk e of) d fy, fp= gku pkfg,A ikjfEHkd d{kkvk dh ikB&iLrdk e fp= vo"; gkA /khj&/khj Åph d{kkvk e bu fp=k dk de djuk pkfg, A mPp d{kkvk e bu fp=k dh fo"k'k vko";drk ughA

21½ **ftYn** ikB;&iLrdk dh ftYn etcr gkuh pkfg,A NkVh d{kkvk e Nk= fdrkc cgr QkMr g vkj nHkkX;o"k vktdy mUgh dh ftYn lcl detkj gkrh gA

22½ **vkoj.k** ikB;&iLrd dk vkoj.k vkd'kd gkuk pkfg,A NkV ckyd jx&fcjx fp=k dk cgr ilUn djr g! vr% mudh iLrdk d vkoj.kk e fofHké fp= gk rk vPNk gA Åph d{kkvk dh iLrdk d vkoj.k lkn] fdUr dykRed gku pkfg,A

23½ **eY;** ikB;&iLrd dk eY; mfpr gkuk pkfg, rkfd Nk= ml ljyrk l [kjhn ld vkj vfHkHkkodk ij vf/kd Hkkj u iMA mi;ä x.kk e iFke iUng x.k ikB;&iLrdk d vkH;kUrfjd x.k gA bue Hkh fuEufyf[kr idkj d x.kk dk mYy[k fd;k x;k g &

¼v½ fo'k;&oLr dh nf'V l vkH;kUrfjd x.kA Øe l[;k 1 l 8 rd of.kr x.k blh idkj gA

¼c½ Hkk'kk dh nf'V l vkH;kUrfjd x.kA Øe l[;k 9 l 13 rd of.kr x.k blh idkj gA

¼l½ "kyh dh nf'V l vkH;kUrkfjd x.kA pkngo vkj iUngo x.k blh idkj d gA ikB;&iLrdk d cká x.kk e Øe l[;k 16 l Øe l[;k 23 rd x.kk dh ppk dh xb gA

### 4..22 3.ikB;&iLrdk dh leh{kk

ikB;&iLrd nk idkj dh gkrh g &

¼1½ l{e v/;;ukFk iLrd]

**l{e** & v/;;u okyh iLrdk dk v/;;u cMh xEHkjrk l fd;k tkrk gA budk mÌ"; ckydk d "kCn&Hk.Mkj e of) djuk] mudk Hkk'kk&Kku c<kuk mud lfä&Hk.Mkj ;k ykdkfä&Hk.Mkj e of) djuk ,o ilxk dk Hkyh&Hkkfr Li'V djuk gA bu iLrdk dk gh lk/kkj.kr;k ikB;&iLrd dgk tkrk gA bUg xgu v/;;u dh iLrd Hkh dgr gA bud v/;;u l Nk=k d Kku e of) gkrh g vkj o y[kd ;k dfo d fopkjk l ifjp; ikIr dj yr gA

**foLrr v/;;ukFk iLrd** foLrr v/;;u d fy, lgk;d iLrdk dk i;kx nr ikB d fy, gkrk gA ble lh[kh gb "kCnkoyh dk gh i;kx fd;k tkrk gA budk mÌ"; ckydk dk nr xfr l i<u dk vH;kl djuk gA Nk= "kh?k xfr l iLrd dk i<dj Hkh mldk vFk le> y] ;gh bl iLrd dk mÌ"; gkrk gA "kCnkFk dk Li'V djuk ,o 0;k[;k djuk bu iLrdk d f"k{k.k dk mÌ"; ugh gkrkA dgh&dgh vko";dkrk iMu ij gh "kCndk"k dh lgk;rk yuh iMxhA

**ipfyr ikB;&iLrd**

ikB;&iLrdk d x.k&nk'kk d vk/kkj ij ;fn oreku dky e ipfyr ikB;&iLrdk dh leh{kk dh tk; rk "kk;n gh dkb iLrd lQy fl) gkA x.kk dh dlkVh ij dlu ij vf/kdk"k ikB;&iLrd [kjh ugh mrjrhA bu ikBk dk ldyu cg/kk fcuk fdlh fu;e ;k Øe d gkrk gA d{kk d Lrj dk /;ku e j[kdj cgr de ikB fy[k ;k ldfyr fd, tkr gA

d{kk 9 e gh t;"kdj ilkn dh jpuk ^chrh foHkkojh tkx jh* dk j[kuk] lfe=kuUnu ir jfpr ^ifjoru^ dk LFkku nuk mi;Dr ugh dgk tk ldrkA x| dh iLrd e vkpk; egkohj ilkn f}onh dr ^lkfgR; dh egŸkk* "kh'kd y[k gkbLdy d{kkvk d vudy ugh dgk tk ldrkA rylh dh jpukvk e vud lUnj LFky g fdUr ik;% /ku';&;K y fy;k tkrk g tk Nk=k dk rylh&lkfgR; dk Kku djku e vleFk jgrk gA

**अपनी प्रगति की जाँच 1 –**

.1पाठ्यपुस्तक के गुण बताइए ?

.2पाठ्यपुस्तक के महत्व बताइए ?

---

## 4.2.3 fgnh e ikB; lgxkeh fØ;k,

;g lofofnr g fd vkt lgxkeh fØ;k, ikB;Øe d vfHkUu vx d :i e Lohdkj dj yh xb gA blfy, iR;d fo'k; d f"k{kd dk ;g i;kl gkuk pkfg, fd og fo'k;xr tkudkjh nr g, ;nk&dnk lgxkeh fØ;kvk dk lgkjk yr g, fo'k; dk vkj #fpi.k cuk,A lgxkeh fØ;kvk }kjk u doy "kf{kd] lkekftd] eukoKkfud vko";drkvk dh gh ifr ugh gkrh g oju bud }kjk ufrdrk dk ekx inf"kr djr g, mue vud #fp;k dk fodkl Hkh fd;k tk ldrk gA

fgnh Hkk'kk ,d ,lk fo'k; g ftll vf/kdkf/kd lgxkeh fØ;k, tMh n[kh tkrh g] D;kfd lgxkeh fØ;kvk dh lph e lcl vf/kd lkfgfR;d fØ;k, fo|ky;k e lEiUu gkrh gA lkfgfR;d fØ;kvk d vrxr Hkk'k.k] okn&fookn ifr;kfxrk] dfork ikB] vUR;k{kjh] ukVd] dfo t;rh] dfo lEeyu] dfo&leknj] dgkuh ifr;kfxrk] dfo xk'Bh bR;kfn fØ;k, vkrh gA

### 4.2.3 1.**ikB; lgxkeh fØ;**k का अर्थ

bu fØ;kvk }kjk tgk ,d vkj Nk=k dk eukjtu djr g, f"k{k.k dh ;kf=drk dk nj dju e lgk;rk feyrh g] ogh nljh vkj Nk=k d Hkk'kkxr Kku ,o dk"ky dk Hkh fodkl lHko gkrk gA Hkk'kk d cgr l mnn";k dh ifr Hkh bud }kjk gk ikrh gA fo"k'k :lk l Nk=k dk vkRekfHk0;fDr d volj ikIr gkr gA mue vkRefo"okl dk lpkj gkrk g rFkk "k) mPpkj.k d lkFk dFku ¼dg ldu½ dh dyk dk fujUrj ifjektu gkrk gA lkfgR;d fØ;kvk dk lpkyu djr g, Nk=k dh lkfgR; d ifr #fp Hkh c<k;h tk ldrh gA

### 4.2.3 2.**ikB; lgxkeh fØ;k**Øa का महत्व

1- Nk=k dk vkRekfHk0;fDr vFkok fopkjkfHk0;fDr d vf/kdkf/kd volj inku djr g, okpu dyk e d"ky cukukA
2- Nk=k e vkRe idk"ku d ek/;e l vkRefo"okl fodflr djukA
3- Nk=k dh lkfgR; d ifr #fp tkxr djr g, mudk Kkuo/ku djukA
4- lgxkeh fØ;kvk d ek/;e l f"k{k.k dh ;kf=drk dk lekIr dj mle u;kiu ykukA
5- Nk=k e fofo/k fØ;kvk d ek/;e l ekuoh; x.kk dk fodkl djuk ;Fkk lg;kxh Hkkouk] Hkkbpkj dh Hkkouk] n;k] lkfg'.krk d Hkko vkfn fodflr djukA
6- Nk=k dk vodk"k dky d lni;kx gr tkudkjh nukA
7- Nk=k e ltukRed dk"ky fodflr djr g, mue mfpr eY;kdu dj ldu dh {kerk dk fodkl djukA
8- Nk=k e urRo dh {kerk fodflr djukA
9- Nk=k dk le; ,o Je d egRo l ifjfpr djkukA
10- lgxkeh fØ;kvk d ek/;e l Nk=k d 0;fDrRo dk lokxh.k fodkl djukA

### 4.2.3 3.Hkk'kk l lEcfU/kr ikB; lgxkeh fØ;k,

Hkk'kk l lEcfU/kr ikB; lgxkeh fØ;kvk e lkLdfrd ,o lkfgfR;d nkuk idkj dh fØ;kvk dk j[kk tkrk gA ;gk ij dN ,lh lgxkeh fØ;kvk dh ppk dh tk jgh g] ftudk vk;ktu vf/kdk"k fo|ky;k e fd;k tkrk g&

**1-Okn&fookn ifr;kfxrk** okn&fookn ifr;kfxrk dk ipyu ,d ikphu ijEijk g A f"k{kk 0;oLFkk e Hkh okn&fookn f"k{k.k dh ,d i.kkyh d :i e ipfyr FkkA bl ifr;kfxrk e Nk= vHkh'V fo'k; d lEcU/k e viu fopkj i{k vkj foi{k e 0;Dr djr gA okn&fookn e mUg viu fopkjk dk j[ku dh i.k Lor=rk gkrh g fdUr ble iR;d ifrHkkxh Nk= d fy, ckyu vFkok fopkjk dk iLrr dju dk ,d fuf"pr le; fu/kkfjr jgrk gA ml fuf"pr fu/kkfjr le; e gh ml viu fopkjk dk rkfdd :i e iLrr djuk gkrk gA ifr;kfxrk d :i e lEiUu djk, tku d dkj.k Nk=k e ifrLi/kk dh Hkkouk dk fodkl gkrk g] o ijh fu'Bk] ifjJe ,o gko&Hkko i.k "kyh d lkFk viu oDr0; dk r;kj djr gA ifr;kfxrk e fot;h Nk= dk fo|ky; }kjk ijLdr Hkh fd;k tkrk gA fo|ky; e ;nk&dnk vFkok eghu e ,d ckj bl ifr;kfxrk dk vk;ktu vo"; djk;k tkuk pkfg,A fo"k'kdj Hkk'kk;h Kkuo/ku dh nf'V l ;g cgr gh ykHkin n[kh tkrh gA

**2-Hkk'kk.k ifr;kfxrk** bl Hkh lkfgfR;d ifr;kfxrk d vrxr j[kk tkrk gA
bldk Hkh ipyu ikphu le; l n[kk tk ldrk gA bl ifr;kfxrk dk vk;ktu Hkh djr g, Nk=k dk Kkuo/ku fd;k tk ldrk gA f"k{kd dk pkfg, fd ikjfEHkd Lrj l gh Nk=k dk Hkk'k.k dh dyk e d"ky cuk,A bld }kjk Nk=k dk u doy vkRekfHk0;fDr d volj gh lyHk gkx oju mue vkRefo"okl Hkh tkxr gkxkA Hkk'k.k ifr;kfxrk e lQy ifrHkkxh Nk=k dk ijLdr Hkh fd;k tkuk pkfg, ftll vU; Nk= Hkh mldh lQyrk l ifjr vuHko djA

**3-vUR;k{kjh** vUR;k{kjh] tlk fd bld uke l Li'V g] vfUre v{kj] l ikjEHk tku okyh ;g ifr;kfxrk cgr gh jkpd ,o eukjtd ekuh tkrh gA vU; ifr;kfxrkvk dh ryuk e Nk= ble fo"k'k #fp yr gA fgnh Hkk'kk d Kkuo/ku dh nf'V l ;g vR;Ur mi;kxh gA ble lHkh Nk=k dk Øe"k Hkkx yu dk volj Hkh ikIr gkrk gA ;g ifr;kfxrk ,d gh d{kk e Nk=k dk nk nyk e ckV dj lEiUu djkb tkrh gA bld vfrfjDr nk vyx&vyx d{kkvk d e/;] nk fo|ky;k d e/;] blh idkj vkx c<r g, jkT; Lrj rd lEiUu djk;h tk ldrh gA ;g ,d idkj dh lkefgd ifr;kfxrk gA ble ifrHkkxh nk nyk e foHkDr gk tkr gA iFke ny dk ,d lnL; fdlh i| vFkok dfork] nkgk vkfn dk lukrk g rFkk nlj ny d lnL; dk NkM x; vfUre v{kj l iuh ikjEHk djr g, dfork lukuh gkrh g] bl idkj nkuk nyk d chp ;g Øe rc rd pyrk jgrk g tc rd dkb ny vfUre v{kj l dfork ckyu e vleFk u gk tk;A fot;h ny dk ijLdr fd;k tkrk gA

vUR;k{kjh dk cgr gh mRlkgo/kd ifr;kfxrk d :i e ekuk tkrk gA ble ifr;kfxrk d vr rd Nk=k e mRlkg cuk jgrk gA ifr;kfxrk e Hkkx yu d mRlkg l Nk= dforkvk] xhrk] "ykdk ,o nkgk vkfn dk ljyrk l dBkx Hkh dj yr gA "k) mPpkj.k d lkFk&lkFk Nk=k e lUnj <x l mfpr mrkj&p<ko d lkFk okpu dju dh dyk dk Hkh fodkl gkrk gA

**4-vuokn ifr;kfxrk** ifr;kfxrkvk dh J[kyk e vuokn ifr;kfxrk dk ie[k LFkku gA vuokn dk vk"k; g fd Hkk'kk e 0;Dr fopkjk dk mlh :Ik e nljh Hkk'kk e iLrr fd;k tk, A Hkk'kk dh lef) gr vko";d g fd vU; Hkk'kkvk dh iLrdk ,o xFkk dk fgnh e vuokn fd;k tk;A ;g ifr;kfxrk ikFkfed ,o ek/;fed Lrjk d fy, mfpr ugh g D;kfd mudk Hkk'kk ij i.k vf/kdkj ugh gkrk] fdUr mPp ek/;fed Lrjk d fo|kfFk;k e bl idkj dh ifr;kfxrk vk;kftr djr g, vuokn dyk dh {kerk dk ikRlkfgr fd;k tk ldrk gA bll Nk=k e vU; Hkk'kkvk d Kku dh of) d lkFk&lkFk vkykpukRed nf'Vdk.k dk fodkl Hkh lEHko n[kk tk ldxkA

**5-dfo t;rh** voljkudy dfo t;rh ;k y[kd t;rh dk vk;ktu dju l Nk=k dh lkfgR; d ifr #fp fodflr dh tk ldrh gA bl ifr;kfxrk d :i e lEiUu ugh fd;k tkrk oju fdlh fof"k'V dfo vFkok y[kd dh dk0;xr fo"k'krkvk] jpukvk dk mudh fof"k'V frFk d vulkj Nk=k] f"k{kdk ,o vkef=r fo}kuk }kjk Lej.k fd;k tkrk gA Hkk'kk d vfrfjDr vU; Nk= Hkh bll fo"k'k ykHkkfUor gkr gA bl fn"kk e dN dfo;k dh t;fr;k fo|ky; e lkfgfR;d fØ;kvk d :i e vk;kftr dh tkrh g] tl& rylh t;rh] dchj t;rh] okYehfd t;rh] Hkkjrun fnol bR;kfnA

**6-dfo lEeyu** Nk=k dk lkfgR; d ifr #fp mRiUUk dju ,o mue jpukRed {kerk dk fodkl dju d mÌ"; l dfo lEeyu dk mi;kxh ikB; lgxkeh fØ;kvk d vrxr j[kk tkrk gA ble Nk=k dk mRd'V dfo;k vFkok jpukdkjk dh jpuk, luu dk volj feyrk gA bl lgxkeh fØ;k dk lpkyu ijh r;kjh d lkFk ,d cM vk;ktu d :i e fd;k tkrk g] blfy, fo|ky;k }kjk lky e ,d ckj ;k nk ckj gh lEiUu djk;k tkuk lHko gk ikrk gA fo|ky; d okf'kdkRlo d le; dfo lEeyu dk vk;ktu djk;k tk ldrk gA

**7-lkfgR; ifj'kn** Hkk'kk d {k= e lkfgR; ifj'kn dk mi;kx ikphu dky l n[kk tk ldrk gA ofnd dky dh f"k{kk 0;oLFkk e ^lkfgR; ifj'kn* dk mYy[k feyrk gA bl ifj'kn dk ie[k mnn"; lkfgfR;d Kku dh of) djuk gkrk g] vr,o fo|ky;k e bl ifj'kn dh LFkkiuk LFkk;h :Ik l dh tkuh pkfg,A o gh Nk= vkj f"k{kd bld lnL; gku pkfg, tk okLro e lkfgR; e #fp j[kr gA bl lkfgR; ifj'kn dh ,d dk;dkfj.kh lfefr Hkh gkuh pkfg, tk o'k Hkj e fd; tku oky dk;dek dh ;ktuk cuku rFkk mud fØ;kUo;u dk er :i nA vkt vU; fo'k;k e Hkh lkfgR; ifj'kn dk :i n[kk tk ldrk g tl& dyk ifj'kn] lxhr ifj'kn] ukV; ifj'kn bR;kfnA

**8-fo|ky; if=dk** fo|ky; if=dk }kjk Hkh Nk=k e lkfgfR;d #fp dk fodkl fd;k tk ldrk gA ;g if=dk fo|ky; d fØ;kdykik dk ifrfcEc Lo:i gkrh gA ble fo|ky;k d o'k Hkj e lpkfyr fd, tku oky dk;dek d o.ku d lkFk&lkFk Nk=k ,o f"k{kdk d y[k] dfork] lLej.k] pVdyk] dgkfu;k] iglu vkfn Hkh idkf"kr fd, tkr gA bld vk/kkj ij Nk=k dh ltukRed d"kyrk dk vueku yxk;k tk ldrk gA bld ek/;e l mudh ifrHkk dk fu[kju dk volj ikIr gkrk gA db fo|ky;k e idkf"kr mRd'V jpukvk dk ijLdr fd;k tkrk g] ftll Nk= ikRlkfgr gkr gA vkt iR;d vkn"k fo|ky; l ;g vi{kk dh tkrh g fd og fo|ky; if=dk d ek/;e l u doy viu fo|ky; d xkjo dk gh c<k, oju fgnh Hkk'kk lkfgR; d lj{k.k] lo/ku e Hkh ;kxnku nA

**10-ljLorh ;k=k,** o'k e ,d ckj ljLorh ;k=kvk dk vk;ktu djr g, Hkh Nk=k dh lkfgR; d ifr #fp c<k;h tk ldrh gA iR;d fo|ky; e ikB; lgxkeh fØ;kvk d vrxr bldk fo"k'k egRo ekuk tkrk gA ; ;k=k, fo|ky;k }kjk gh lpkfyr dh tkrh gA ; ek= eukjtd gh ugh gkrh oju bud ek/;e l Nk=k e vud x.kk dk fodkl Hkh n[kk tkrk g] tl & ltukRedrk] feyty dj dk; dju dh Hkkouk] mRrjnkf;Ro dh Hkkouk bR;kfnA

mijkDr ikB; lgxkeh fØ;kvk d vfrfjDr dN vU; ,lh fØ;k, g ftud fy, fdlh fo"k'k vk;ktu dh vko";drk ugh iMrh rFkk eghu e ,d ;k nk ckj vFkok lIrkg d vfUre fnu "kfuokj dk lEiUu djk;h tk ldrh g& tl y?k ukVd dk epu] Hkk'kk l lEcfU/kr ikLVj vFkok pkV ifr;kfxrk] dgkuh ifr;kfxrk] dfork ikB] ¶y"k dkM r;kj dju l lEcfU/kr ifr;kfxrk] ed vfHku; bR;kfnA

## अपनी प्रगति की जाँच 1 –

.1 ikB;lgxkeh fØ;k ओं का महत्व बताइए?

.2 ikB;lgxkeh fØ;k का अर्थ बताइए ?

---

## 4.2.4 J0;&n"; lk/ku

ftu lkefx;k d i;kx l Nk= ludj eu e "kCn&fp= dk fuek.k djrk g vkj n:g tho dk le>rk g] mu midj.kk dk J0; midj.k dgk tkrk gA

4.2.4 1.**J0;&n"; lk/kuk dk rkRi;**

Hkk'kk & f"k{k.k d le; dN dfBu "kCnk ;k okD;k dk Li'Vhdj.k dju d fy, ekf[kd mnkgj.kk dh lgk;rk yh tkrh gA ekf[kd :i l "kCn&fp= iLrr dju oky lk/kuk dk ekf[kd mnkgj.k dgk tkrk gA

dN lk/ku n"; gkr gA bu lk/kuk dk n[kdj "kCn] vFk ;k Hkko dk le>k tkrk gA J0; midj.kk e Jo.kfUn; dk i;kx g rk n"; midj.kk dk vk[kk l n[kk tkrk gA dN midj.k ,l gkr g] tk J0;&n"; nkuk gkr gA ,l midj.k cgr de gA ";keiV] pkV ikLVj vkfn n"; midj.k gA jfM;k] xkekQku vkfn J0; midj.k gA Vyhfotu] vfHku; vkfn dN J0;&n"; nkuk gA fdUr J0;&n"; midj.k uke 0;kid g vkj doy J0; ;k doy n"; dk Hkh lkekU;r;k J0;&n"; midj.k dg fn;k tkrk gA vr% Hkk'kk& f"k{k.k e bud i;kx dh ppk djr le; l{e Hkn dk /;ku e ugh j[kk tk;xkA

4...24 2.**भाषा में J0;&n"; lk/ku**

**fp=** ikB dk vkd'kd o jkpd cuku d fy, v/;kid fp= dk i;kx dj ldrk gA j[kkvk vkj jxk dk ;g og l;kx tk viuh ed Hkk'kk e fdlh rF;] Hkko ;ktuk dh vfHk0;fä dj] fp= dgykrk gA ;g vk[kk dk lkUn; inku djrk gA fp= e oLrvk dk fp=.k jgrk gA dyk dk in"ku] eukjtu] HkkokfHk0;fä] lkUn;kfHk0;fä] ey] o.ku lpuk] Kku] f"k{kk] /kkfed Hkkouk] v/;kReokn] er ipkj vkfn bld vud mÌ"; gA lk/kkj.k rLohjk vkj "kf{kd fp=k e vUrj gkrk gA "kf{kd fp= doy eukjtu] dkrgy] vkuUn ;k lkUn; d fy, u gkdj vuHko] Hkko] rF;] Kku ,o f"k{kk inku dju d fy, gkr gA

iLrdk e Hkh fp= gkr g] fdr o NkV gkr gA f"k{k.k d fy, ckgj l cM fp= y tku iMr gA ; lLr ,o lyHk gku pkfg,A egki#'kk d fp=] LFkku d fp= ;k ;)&o.ku vFkok lHkk&lEeyuk d fp= Hkk'kk&f"k{k.k e ljyrk l i;ä gk ldr gA ,d ihfj;M e vud fp=k dh vi{kk ,d ;k nk fp= gh i;ä dju pkfg,A iR;d fp= lkÌ"; gk vkj mu ij vko";d i"u fd, tku pkfg,A fp= dk ,lh txg Vkxuk pkfg,] tgk l og lHkh ckydk dk ljyrk l fn[kkb iMA fp= Li'V gkuk pkfg,A bue dykRedrk] Li'Vrk] iHkkforkk] "k)rk] fo"oluh;rk] lR;rk ,o i.krk gkuh pkfg,A bl eukjtd] vkd'kd] mŸktd ,o 0;kogkfjd gkuk pkfg,A bldk vkdkj bruk cMk gk fd ijh d{kk n[k ldA

**j[kkfp=** oLr ifrefr ;k fdlh vU; lk/ku d vHkko e v/;kid dHkh&dHkh j[kkfp= dk lgkjk yrk gA j[kkfp= v/;kid }kjk dN j[kkvk d ek/;e l Hkko dh ed vfHk0;fä gA ";keiV ij pkd d lgkj v/;kid j[kkfp= [khpdj ikB dk jkpd cuk nrk gA fofHké j[kkvk] dk.kk ?kekok vkfn dk ";keiV ij i<kr le; cukuk LokHkkfod Hkh g vkj ljy Hkh gA e.Mykdkj] mPpkl.u vkfn "kCnk dk Li'Vhdj.k j[kkfp= }kjk fd;k tk ldrk gA

**ekufp=** ekufp= dk lokf/kd i;kx bfrgkl&Hkxky dh d{kkvk e gkrk g] fdr Hkk'kk d ikBk e dN ,frgkfld ;k Hkkxkfyd rF;k o ilxk dk Li'V dju d fy, ekufp= dk i;kx fd;k tk ldrk gA ukyUnk] vknUrijh] foØef"kyk] fgefxfj] xknkojh] djy] ukxky.M tl ikBk dk ekufp= dh lgk;rk l i<kuk ljy gk tkrk gA

**[kkmh cM** ,d cM r[r ij Qykyu ;k [kknh diMk ;k Åuh diMk rkudj fpidk fn;k tkrk g vkj bl ckM dk Qykyu ckM ;k [kknh ckM dgr gA ble pkd l dN fy[kk ugh tkrk oju dN fp=k ;k fpguk dh dfVx fpidkb tkrh gA ikB l lEcfU/kr fp=k dk fofHké ikLVjk] iLrdk] if=dkvk ;k lekpkj&i=k l dkV fy;k tkrk g vkj mud ihN jxekj dkxt yxk fn;k tkrk gA vc bu fp=k dk [kknh ckM ij fpidku ij ; fpid tkr g vkj vko";drkuklkj fudky tk ldr gA bu fp=k ;k vkdfr;k d ihN viuh tkudkjh d fy, Øe l[;k fy[k nh tkrh g ftll dgkuh dk fodkl dju e fp=k dk Øec) :i l iLrr fd;k tk ldA ikjfEHkd Lrj ij o.kekyk fl[kku e] l;äk{kjk dk Kku djku ,o ek/;fed Lrj ij fucU/k ;k dgkuh dk fodkl dju e [kknh ckM dk mi;kx fd;k tk ldrk gA

**fyXokQku rFkk xkekQku** J0; midj.kk e xkekQku dk viuk egRo gA ;g midj.k fjdkMk dh lgk;rk l ckydk dk eukjtu djr g vkj f"k{kk Hkh nr gA elky d cu xky ro ij j[kkvk d :i e /ofu Hkj yh tkrh g vkj rc fyXokQku dh lgk;rk l ikB luk fn; tkr gA xkekQku dh lgk;rk l dfork] ,dkdh lokn vkfn dh f"k{kk jkpd <x l nh tk ldrh gA dfork dk okpu okrkykii] lokn ,o Hkk'k.k dh "kfy;k dk Kku bld }kjk ljyrk l gk ldrk gA xkekQku d fjdkM LFkk;h gkr gA vc cu&cuk, fjdkM cktkj l ikIr gk ldr gA lLoj okpu ] "kCn&mPpkj.k] vkn"k okpu vkfn dk vH;kl bud }kjk ljyrk l fd;k tk ldrk gA

**jfM;k** jfM;k dk i;kx vc Hkkjrh; ifjokj e Hkh c<rk tk jgk gA f"k{kky;k e ;g lk/ku ;fn lyHk g rk bld dk;dek dh igy l tkudkjh ikIr djd Hkk'kk&f"k{k.k e bldk mi;kx fd;k tk ldrk gA Hkkjr d iR;d fo|ky; e lHkh fo}ku ;k Hkk'kkfon ugh igp ldrA Hkk'kk&fo"k'kK vkdk"kok.kh }kjk viu oä0; ilkfjr djr jgr gA bu okrkvk dk ludj Nk= viuk lkfgfR;d Kku c<k ldr gA

**VifjdkMj** ;g ,lk ;U= g tk fctyh ;k cVjh dh lgk;rk l Vi ij igy l lxghr /ofu dk ilkfjr djrk gA xkekQku d fjdkM LFkk;h gkr g] fdUr VifjdkMj d Vi vLFkk;h gkr gA ; rkj ;k Qhr oky fjdkM gkr g vkj bUg tc pkg rc lekIr dj bu ij nlj fjdkM Hkj ldr gA oä0;] Hkk'k.k] dfork] xhr] okrkyki vkfn dk Vi djd fo}kuk d Loj ge ckj&ckj lu ldr gA ;g jfM;k l dgh vf/kd iHkkoh ,o egRoi.k lk/ku g D;kfd ble le; dk cU/ku ugh gkrkA

**vfHku;** fo|ky; e fo"k'k :i l dHkh&dHkh ukVdk dk vk;ktu gkrk gA okf'kdkRlo] lEeyu ;k fdlh fo"k'k fnu d vk;ktu e vkxUrdk d eukjtukFk ukVd vfHkuhr fd, tkr gA fgnh&f"k{k.k dh nf'V l vfHku; egRoi.k gA vfHku; dk n[kdj ,o ik=k d e[k l Li'V ,o mfpr vkjkgkojkg ;ä ok.kh dk ludj Nk= Hkk'kk dk mfpr i;kx lh[kr gAvfHku; J0;&n"; lk/ku g ftl n[kk vkj

luk tkrk gA vfHku; d ek/;e l ckyd dk LokHkkfod xfr l ckyu dh vknr iM tkrh gA og "kCnk ,o okD;k dk l tho <x l ckyuk lh[k tkrk gA

**pyfp=** pyfp= vkt eukjtu dk loie[k lk/ku cu x;k gA if"peh n"kk e ikB;&oLr dk Li'V dju d fy, pyfp=k dk [kc i;kx gku yxk gA lkfgR; e of.kr fofHké idkj d dkYifud n";k dk o.ku }kjk Li'V fd;k tkrk g] fdUr bu n"; dk fQYek e QkVkxkQh dh dyk }kjk ljyrk l inf"kr fd;k tk ldrk gA uohu [kktk d ifj.kkeLo:i vkt QkVkxkQh dh dyk e cgr fodkl gk x;k g vkj l{e vxk dk fn[kk;k tkuk lEHko gk x;k gA

vkt fluek d ifr yxxk dh vPNh /kkj.kk ugh g] D;kfd Hkkjr e ipfyr fQYe cMh ?kfV;k fdLe dh g] fdURk bue l/kkj fd;k tk ldrk g vkj egku i#'kk d thou l pudj vPN lk/ku iLrr fd, tk ldr gA Hkkjr e "kf{kd pyfp= cgr de cur gA lkFk gh ;g lk/ku 0;;lk/; gA dHkh&dHkh bl lk/ku dk lyHk gkuk dfBu gA fo|ky; e ikTkDVj dh 0;oLFkk ugh gkrh vkj dkb vPNk v/kjk dejk ;k gky ugh gkrkA vr% ;g Hkkk'kk&f"k{k.k e i;Dr ugh fd;k tk ldrkA

**Vyhfotu** jfM;k dk vR;Ur fodflr :i Vyhfotu g ftle /ofu d lkFk&lkFk fp= Hkh vkr gA Vyhfotu dUn e v/;kid Hkk'kk dh f"k{kk ndj nj&nj rd cB JkRkk n"kdk dk Hkk'kk fl[kk ldrk gA ;g J0;&n"; lk/ku g D;kfd ble ge ckyu oky dk n[k Hkh ldr gA dku vkj vk[k nkuk bfUn;k d i;kx d dkj.k ;g lk/ku vf/kd iHkko"kkyh gA jfM;k lV d lkFk ,d NkV vkdkj dk jtriV yxk jgrk g ftle lgL=k fdykehVj njh ij cB g, 0;fä dk dfork lukr g,] Hkk'k.k nr g,] okrkyki djr g, n[kk tk ldrk gA jfM;k vkj pyfp= nkuk d ykHk bll fey ldr gA

Øe l[;k ,d l nl rd d lk/ku doy n"; lk/ku gA Øe l[;k 11]12 vkj 13 d lk/ku doy J0; lk/ku g vkj ckn d rhu lk/ku J0;&n"; nkuk dk y A

**अपनी प्रगति की जाँच 1 –**

.1 भाषा शिक्षण में J0;&n"; lk/ku स्पष्ट करें ?

.2 J0;&n"; lk/kuk dk rkRi; क्या है बताइए ?

---

## 4. 3.सारांश

Nk= d{kk e ;k d{kk l ckgj] fo|ky; dh lhek d vUrxr fdlh LFky ij tk dN vuHko djrk g og lc ikB;Øe e है | विद्यार्थी की रूचि एवं योग्यता के अनुसार पाठ्यक्रम को विभिन्न भागों में बांटा जा सकता है | ikB;&iLrdk dh vko";drk lk/ku :i e gh g] lk/; :i e ugh| xg&dk; nu, dYiuk&"kfDr का विकास करने आदि विभिन्न कार्यों को पाठ्यपुस्तक से साधित कर सकते है | ,d vPNh ikB;&iLrd dh dN fo"k'krk, gkrh g] o gh fo"k'krk, mld x.k dk fu/kkj.k djrh gA वे गुण vkH;Urfjd और ckÁ के रूप में दो भाग कर सकते हैं | vkH;Urfjd x.k iLrd d o Hkhrjh x.k g tk mldh Hkk'kk] "kyh] ikB;&fo'k; vkfn dh nf'V l gkr gA ckÁ x.kk e iLrd dk vkoj.k] en.k] lkTk&lTtk vkfn gkr gA fgnh Hkk'kk ,d ,lk fo'k; g ftll vf/kdkf/kd lgxkeh fØ;k, lEc) n[kh tkrh g] D;kfd lgxkeh fØ;kvk dh lph e lcl vf/kd lkfgfR;d fØ;k, fo|ky;k e lEiUu gkrh gA lkfgfR;d fØ;kvk d vrxr Hkk'k.k] okn&fookn] dfork ikB] vUR;k{kjh] ukVd] dfo t;rh] dfo lEeyu] dfo&leknj] dgkuh ifr;kfxrk] dfo xk'Bh bR;kfn fØ;k, vkrh gA

**.5.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर**

अपनी प्रगति की जाँच –

उत्तर -अध्याय 5.2 देखे |

**5.5शब्दावली**

**नाट्य रूपांतरण विधि :**

"अभिनय का अर्थ अतीत या वर्तमान की किसी स्थिति को क्रिया और जीवन देना है |इसका प्रयोग जिसमें किया जाता है,उसको नाट्य रूपांतरण या भूमिका अभिनय कहा जाता है "|

**पाठ्य सहगामी गतिविधियां :**

"छात्रों में शास्त्रीय दृष्टिकोण विकसित करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है ,इस गतिविधियों को पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ कहते है "|

**4.6 कार्य आवंटन**

(1हिंदी शिक्षण का विभिन्न स्तरों का पाठ्य क्रम स्पष्ट कीजिए |

(2 हिंदी शिक्षण के माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम को समीक्षा कीजिए |

**4.7 क्रियाएँ**

(1हिंदी शिक्षण में दृश्य-श्रव्य उपकरणों की उपयोगिता का वर्णन कीजिए|

(2विभिन्न पाठ्य सहगामी गतिविधियों की हिंदी शिक्षण में भूमिका बताइये|

**5.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)**

(1पाठ्यपुस्तक एवं पूरकपुस्तकों का छात्रों के सर्वांगीण विकास में भूमिका स्पष्ट कीजिए |

(2विभिन्न पाठ्य सहगामी गतिविधियों की छात्रों के विकास में भूमिका स्पष्ट कीजिए|

**4.9 संदर्भ पुस्तकें**


- कुमारी, सुशीला, (2010), "इतिहास –शिक्षण की आधुनिक विधियाँ", दिल्ली, लोक शिक्षा मंच |
- जैन, आमिर चंद, (2013), "सामाजिक ज्ञान शिक्षण", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी |
- त्यागी, गुरसरनदास, (2015), "सामाजिक अध्ययन का शिक्षण", आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन |
- दीक्षित, उपेन्द्रनाथ तथा बघेला, हेतसिंग, (2014), "इतिहास शिक्षण", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी|
- पांडये, रमाकांत, (2012), "इतिहास शिक्षा", दिल्ली, अनुभव पब्लिकेशन|
- पांडये, शिवेन्द्र कुमार, (2013), "समाज अध्ययन –शिक्षण की आधुनिक विधियाँ", दिल्ली, लोक शिक्षा मंच |
- वात्सायन, प्रो. टी., (2006), "भूगोल – शिक्षणकी आधुनिक विधियाँ", दिल्ली, लोक शिक्षा मंच |
- सक्सेना, राधारानी, (2013), "नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी|
- शर्मा, माता प्रसाद, (2008), "नागरिकशास्त्र शिक्षण", जयपुर, अपोलो प्रकाशन |

# इकाई 5 - विभिन्न विधाओं का शिक्षण

गद्य का शिक्षण, पद्य का शिक्षण, नाटक का शिक्षण रचना का शिक्षण, व्याकरण का शिक्षण आदि शिक्षण विधाओं का स्वरूप, वैशिष्ट्य, शिक्षण विधियों के संदर्भ में आलोचना।

**-: इकाई रचना :-**


**5.0 इकाई परिचय**

**5.1 शिक्षण के उद्देश्य**

**5.2 विषय विवेचन**

**5.2.1गद्य का शिक्षण**

**5.2.1.1गद्य का स्वरूप**

**5.2.1.2 गद्य शिक्षण का उद्देश्य**

**5.2.1.3 गद्य का शिक्षण विधियाँ**

**5.2.2पद्य का शिक्षण**

**5.2.2.1पद्य का स्वरूप**

**5.2.2.2 पद्य शिक्षण का उद्देश्य**

**5.2.2.3 पद्य का शिक्षण विधियाँ**

**5.2.3नाटक का शिक्षण**

**5.2.3.1नाटक का स्वरूप**

**5.2.3.2 नाटक शिक्षण का उद्देश्य**

**5.2.3.3 नाटक का शिक्षण विधियाँ**

**5.2.4रचना का शिक्षण**

**5.2.4.1रचना का स्वरूप**

**5.2.4.2 रचना शिक्षण का उद्देश्य**

**5.2.4.3 रचना का शिक्षण विधियाँ**

**5.2.5व्याकरण का शिक्षण**

**5.2.5.1व्याकरण का स्वरूप**

**5.2.5.2 व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य**

**5.2.5.3 व्याकरण का शिक्षण विधियाँ**

**5.3 सारांश**

**5.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर**

**5.5 शब्दावली**

**5.6 कार्य आवंटन**

**5.7 क्रियाएँ**

**5.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)**

**5.9 संदर्भ पुस्तकें**

## 5.0 इकाई परिचय

शिक्षण विधियाँ

Hkk'kk dk fopkjk] Hkkok ,o bPNkvk dh vfHk0;fDr dk lk/ku ekuk tkrk gA Hkk'kk dh i.krk d fy, fy[ku] i<u] ckyu rFkk lkpu d dk"kyk dk fodkl gkuk vR;Ur vko";d gkrk gA Hkk'kk vf/kxe f"k{k.k dk {k= vf/kd 0;kid gkrk gA vr% Hkk'kk d उक्त ?kVdk dk lh[ku d fy, f"k{k.k fof/k;k dk Hkk'kk d fofHkUu vxk d lkFk fo"y'k.k djuk vko";d g l साहित्य के अन्तर्गत विविध विधाओं का समावेश देखा जा सकता है।हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में गद्य,पद्य,नाटक, कहानी, कथा, रचना आदि आती हैं । उन विधाओं को सीखने के लिए विशिष्ट विधियाँ भी हैं । उन विधाएं एवं संम्बन्धित शिक्षण विधियों का परिचय इस इकाई में दिया गया है ।

## 5.1 शिक्षण के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे :

I. हिंदी शिक्षण का विभिन्न विधायों का ज्ञान प्राप्त करना |
II. हिंदी शिक्षण की विभिन्न विधियों का ज्ञान प्राप्त करना |
III. हिंदी शिक्षण की विभिन्न विधायों का तंत्रों का ज्ञान प्राप्त करना |
IV. हिंदी शिक्षण की विभिन्न विधायों के वैशिष्ट्यों का ज्ञान प्राप्त करना |
V. हिंदी शिक्षण का विभिन्न विधियाँ एवं शिक्षण विधियों की उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त करना |
VI. विभिन्न विधाओं का पठन शैली का ज्ञान प्राप्त करना |

## 5.2 विषय विवेचन

### 5.2.1 x| f"k{k.k

**प्रस्ताबना**

lLdr Hkk'kk e x| dh mRifr ikphu dky l gh gA ;ton d cká.kxन्चों e mifuink e x| lkfgR; dk fun"ku feyrk gA x| dk Kkuktu dk mRre lk/kd d :i e ekuk tkrk gA

### 5.2.1.1गद्य का स्वरूप

x| lkfgR; dk fuek.k e ltu {kerk dh ijkdk'Bk utj vkrk gA vr%dgk tkrk g ^x| dfork fud'k onfUr**A x| lkfgR; fopkjk dh ;"kLoh vfHk0;fä gh gA tk lkfgR; jpuk] y;] o= x.kek=k vkfnvk l cU/ku jfgr g mudk x| dgk tkrk gA x| dk fHkUu&fHkUu "kfy;k d vulkj x| jpuk e lkekU;r% fuc/k] dFkk] vkRedFkk] pfj=] ukVd] miU;kl] ,dkdh vkfn Hkn gkrk gA J'B x| lkfgR; okpu l eu vYgkfnr gkrk gA "kCn ckt kj e of) d fy, x| lkfgR; cgr mi;kxh gkrk gA

### 5.2.1.2 गद्य शिक्षण का उद्देश्य

- Nk=k d "kCn"kfDr dk fodkl gkuk
- x|k"k iBu l "k) mPpkj.k dk fodkl gkuk
- lLdr Hkk'kk dk ifjp;
- x| ikBk dk Hkko] fopkj le> e vkukA
- lkfgR; ltu d fy, ij.kk ikIr djuk
- dYiuk "kfDr dk fodkl djuk
- lLdr Hkk'kk dk mRre ifjp; gkukA
- fo'k; ,o vk"k;k dk xg.k l Kku ikfIr djuk

### 5.2.2.3 x| dh f"k{k.k fof/k;k

lLdr x| f"k{k.k e db fof/k;k dk i;kx fd;k tkrk gA mue l dN fof/k;k dk ;gk mYYk[k dj jg gA

**½1½ vuokn i)fr &**
vuokn i)fr x| f"k{k.k dh ikphu o ykdfi; i)fr gA vFkkr fgnh Hkk'kk e ektn x|k"k dk le>ku d fy, ekr Hkk'kk e vuokn djd Nk=k dk le>k;k tkrk gA

**½2½ vFk dFku i)fr &**
;g fgnh x| dh ijEijkxr i)fr gA bl fof/k e v/;kid loiFke x|k"kk i= Øfed :i l ekf[kd iBu djrk g vkj bld ckn x|k"k e vk, dfBu "kCnk dk vFk crkrk gA

**½3½ 0;k[;k fof/k &**
;g fof/k vFk dFku fof/k dk gh fodflr :i gA ble v/;kid ekf[kd :i l iBu dju d ckn "kCnk dh vkj Hkkok dh 0;k[;k djrk gA

**¼4½ fo"y'k.k fof/k &**
bl i.kkyh e f"k{kd "kCn ,o Hkkok dh 0;k[;k d fy, i"uk vkfn dk lgkjk yrk gA iR;d okD; dk nlj okD; l leUo; djrk gA ,o i.k x|k"k dk ikB dh nf'V l Hkkokred fopkjkRed :i l fo"y'k.k djrk gA

**½5½ l;Dr fof/k&**
;g fof/k lkjh fof/k;k dk fefJr :i gA ble lkjh fof/k;k dk fefJr :i l i;kx fd;k tkrk gA

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. गद्य का स्वरूप बताइए ?

2. गद्य शिक्षण का उद्देश्य बताइए ?

---

## 5.2.2 पद्य का शिक्षण

fdlh Hkh Hkk'kk lkfgR; dh vkRek dk0; gkrh gA dk0; d }kjk lkfgR; e lkUn; dk vfo'dkj gkrk gA dk0; ikjEHk l gh ân; dk fo'k; jgk gA dk0; e dfo dh uohu lnj dYiuk fn[krh g vr% dgk tkrk g ^^tk u n[k jfo ok n[k dfo**A

### 5.2.2.1i| का स्वरूप

dk0; d Lo:i dk Li'V dju d fy, db fo}kuk u vud er fn; gA tl fd ^^jkRed dk0;e** fo"oukFk dfojkT; u dgkA vFkkr jl l ;Dr okD; gh dk0; gA i- jkt txjukFk viu "kCnk e ^^jHk.kh;kFk ifriknd% "kCn% dk0;e** vFkkr je.kh; vFkk dk ifriknu dju okyk "kCn gh dk0; gA ^^rnnk'kk "kCnkFkk lx.kkouydrh iu% Dokfi**A dk0; g ,lk eEeV ^^dgr gA vFkkr funk'k x.k ;Dr cg/kk vydkj ;Dr "kCn dk0; gA

mijkDr y{k.kk l ;g Li'V gkrk g fd ftld i<u l eu dk "kkfr vkuUn je.k dk ikIr gkrk g og dk0; gA

### 5.2.2.2 i| शिक्षण का उद्देश्य

1½ Nk=k e dk0; fo'k;d ie fuek.k djukA
2½ dk0;xr lkUn; Hkko jl vkfn dk vuHko d ifr ij.kk ikIr djukA
3½ y;] Hkko] xfr] vulkj dk0; iBu dju dh ;kX;rk dk fuek.k djukA
4½ dk0; dk ie[k Hkko le>dj mld lkFk ,d :i gkukA
5½ Nk=k e dYiuk "kfDr dk fodkl djukA
6½ Nk=k e rd"kfDr dk fodkl djukA
7½ dk0; d fofHkUu fo/kkvk dk ifjp; ikIr djukA
8½ dk0; e fufgr dk0;kFk] 0;X;kFk] y{k.kkFk dk le>u e leFk gkukA
9½ Nk=k e dk0; jpuk dju dh {kerk dk fodkl djukA
10½ ufrd eY;k dk fodkl djukA

### 5.2.2.3 i| का शिक्षण विधियाँ

**1½ xhr rFkk vfHku; i.kkyh&**
bl i.kkyh e xhr dk lLoj okpu d lkFk&lkFk vfHku; dk Hkh i;kx fd;k tkrk gA vfHku; i/kku ink e vx lpkyu dk f"k{k.k fn;k tkrk gA bl fof/k l Nk=k e dk0; d ifr #fp mRiUu gkrh gA dfork; "kh?k dBLFk gk tkrh gA bl fof/k e ^^djd lh[kuk** fu;e dk i;kx fd;k tkrk gA

**2½ vFk ckf/k i.kkyh&**
bl i.kkyh e f"k{kd Lo; dfork dk okpu djrk gA ,d&,d ifDr d okpu d lkFk&lkFk vFk Hkh Li'V djrk g ijUr bl fof/k l Nk= dh #fp dk /;ku ugh j[kk tkrk gA ;g fof/k v/;kid dfUnr gkrh gA

**3½ 0;k[;k i.kkyh &**
bl fof/k e v/;kid i| d ,d in dk ydj vFk crkr g, dfo dk er ifofRr] jpuk "kyh] dfork dh Hkk'kk] jl] vydkj] Hkko vkfn dk Li'Vhdj.k djrk gA lkFk&lkFk dfork e fo|eku vUrj dFkk dk Hkh Li'V djrk gA

4½ **[k.Mkuo; i.kkyh&**
bl i.kkyh dk i"ukRrj rFkk fo"y'k.k i.kkyh Hkh dgr g ftl i| e fo"k'krkvk dh vf/kd gk Hkkok dh Hkjekj gk ,o ,d&,d "kCn dk vFk Li'V fd; fcuk dfork dk vFk Li'V ugh gkrk g ogk bl i.kkyh dh vko";drk iMrh gA v/;kid bl i.kkyh e i"ukRrj djr g, i| dk fo"y'k.k djrk gA
5½ **0;kl i.kkyh&**
bl i.kkyh e i| d i|k dk Hkk'kk vkj Hkko nkuk dh nf'V l fo"yf'kr fd;k tkrk gA Hkkok dk Li'Vhdj.k d fy, v/;kid vud mnkgj.kk] n'VkUrk rFkk lfDr;k dk i;kx djrk gA Hkk'kk dh nf'V l ,d&,d "kCn mikn;rk okD; foU;kl dk Li'Vhdj.k djrk gA

vr% bl fof/k e inku oky dk Kku xgu gkuk vko";d gA bl fof/k dk Vhका fof/k dgk tkrk gA

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. पद्य का स्वरूप बताइए ?

2. पद्य शिक्षण का उद्देश्य बताइए ?

---

## 5.2.3 नाटक का शिक्षण

**iLrkouk**
Hkkjr e ukV; dyk dh mRifRr on dky l gA on d m'kk o.ku] i#ok] mo"kh] e ;g Li'V gkrk g ,o Hkjr dk ukV; "kkL= tx ifl) gA ukVd dk lpkj dk ,d iHkkoh ek/;e Hkh ekuk tkrk gA
vr% ukVd f"k{k.k Hkh f"k{k.k e ,d egRoi.k v"k gA

### 5.2.3.1 नाटक का स्वरूप

ukVd Hkko vfo'dkj dk mRre lk/ku gA ikphu lLd`r lkfgR; e ukVd dk n";dkO; ekuk x;k FkkA ukVd dk nl Hknk d बाँVk tkrk FkkA fo'k; oLr dh nf'V e ukVd dk ,frgkfld] ikjkf.kd] lkekftd] eukoKkfud] ,o "kf{kd vkfn Hknk l ckVk tk ldrk gA ukVd e lokn x| e gkrk g dHkh&dHkh i| :i Hkh n[kk tkrk gA ftldk xhrh; ukV; dgk tkrk gA

### 5.2.3.2 नाटक शिक्षण का उद्देश्य

1½ Nk=k e vkjkg vojkg d vulkj lokn dju dh ;kX;rk dk fuek.k djukA
2½ lokn e fufgr vk"k;k d vulkj gko&Hkko fuek.k dh ;kX;rk mRiUu djukA
3½ vfHkuo dyk l ifjfpr djkukA
4½ ekuo pfj= ,o LoHkko dk Kku ikIr djukA
5½ fofHkUu thou n"kuk dk Kku ikIr djukA
6½ vudj.k dh {kerk dk fodkl djukA
7½ Hkkf'kd Kku e fodkl djukA
8½ Lor% dh Hkkouk dk iHkkoh :i e idV dju dh {kerk ikIr djukA
9½ fofHkUu ukVd fo'k;d Kku ikIr djukA
10½ LoLFk eukjtu ,o fgrjd min"kk dk lgt ek/;e l ikIr djkukA

### 5.2.3.3 नाटक की शिक्षण विधियाँ

1½ **0;k[;k i.kkfy**& bl fof/k e v/;kid leLr ukVd dk Lo; okpu djrk g vkj ukVd d y[kd] ik=] i;ktu] ?kVuk,] dFkkoLr] dथोचरूथन dFku] pfj=] fp=.k] Hkkk'kk"kyh] Hkko vkfn ij Lo; gh iopu djrk pyrk gA ftll ukVd d fofHkUu i{kk dk lkUn; ,o fo"krk, idV gk tkrh gA
2½ **vkn"k ukV; i.kkyh** & bl fof/k e v/;kid Lo; gh ukVd dk okpu djrk g fdUr ;g okpu okfpd vfHku; gkrk gA vr% fofHkUu ik=k d vudy Hkk'kk e mrkj&p<ko vk tkrk gA bl i.kkyh l Nk=k l Nk=k dk eukjtu rk gkrk g ijr fuf'd; gkrk gA
3½ **jxep i.kkyh**& bl i.kkyh e Nk= ,d&,d ik= dh Hkfedk vnk djr gA igy ik= dh ijh Hkfedk Nk= vH;kl dj yr g vkj ckn e lHkh Nk= feydj ij ukVd dk jxep ij miLFkkfir djr gA ;g i)fr mRre g ijUr fo|ky;k e lk/kuk dk vHkko dh otg l ik;% lQy ugh gk ikrh gA
4½ **d{kk vfHku; i.kkyh**& bl fof/k e Nk= ,d&,d ik=k d vulkj okfpr vfHku; djr gA iFker iR;d Nk= ,d ik= dk lokn vPNh rjg l i<dj le> yrk g vkj ckn e d{kk e gh ik=k d vulkj okpu djr gA ;g i.kkyh d{kk dh nf'V l vR;Ur ;kX; ,o l[r gkrh gA

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. नाटक का स्वरूप बताइए ?

2. नाटक का शिक्षण विधियाँ बताइए ?

---

## 5.2.4 रचना का शिक्षण

**iLrkouk**

Nk= Hkk'k.kkRed vfHk0;fDr e cgr&dN ckyu e leFk gkr g ijUr viu fopkjk dk y[ku d tfरएं vfHk0;Dr dju e mruk leFk ugh gk ikr vr% इसलिए jpuk f"k{k.k dk egR0k gA vr% jpuk dk vFk okD;k dk l tkuk] cukuk] Øec/; djuk Hkh dgk tk ldrk gA

### 5.2.4.1रचना का स्वरूप

f"k"k cgr lkj "kCn dgrk g okD; Hkh cनाTrk gA ijUr dHkh&dHkh og okD; lkFkdrk] vkdk{kk] fopkjk] Hkkok dh nf'V l ;kX; ugh gkrk gA vr% okD; jpuk e db lkjh fo"k'krk, gkrh gA t l dh inØe] Li'Vrk] vkdk{kk] lkeF;] e/kjrk vkfn g inØe e drk] de] fØ;k vkfn dkjd vkdk{kk,] Jkrk dh mRrकंBk "kkUr gkuk vfuok; gA lkeFk dh nf'V l okD; Jkrk d voxe ;kX; gk ,o e/kjrk dh nf'V l okD; de dVu gkA bu fo"k'krkvk d lkFk okD; jpuk d i"pkr mu okD;k dk fofo/k fo/kkvk e jpuk i<rk gA tk fd jpuk dh fo/kk, gkrh g ; fo/kk, vuNPn jpuk] i| jpuk] okD; jpuk] e/kjpuk] i"u dh jpuk vkfn gk ldrh gA

### 5.2.4.2 रचना शिक्षण का उद्देश्य

1½ ljy "kCnk l viu Hkkok dk 0;Dr dju e leFk cukukA
2½ i"uk d mRrj 0;ofLFkr :i l nu e leFk gkukA
3½ Nk=k e "k)] Li'V] lUnj fy[ku dh {kerk dk fuek.k djukA
4½ Lor% dk Hkko iHkkoh "kCnk e fy[kdj 0;Dr dju e leFk gkukA
5½ y[ku e lfDr;k dk ykdkfDr;k dk egkojk dk i;kx e leFk djukA
6½ nh?k vuPNnk dk lkjk{k fy[ku e leFk gkukA
7½ fdlh Hkh fo'k; ij viu fopkjk d lkFk vuPNn fuek.k gku e leFk gkukA
8½ lokn fy[ku dh {kerk fodflr djukA
9½ iHkkoh i= y[ku dh {kerk fuek.k djukA
10½ y?k&y?k in;k dk fuek.k dju e leFk gkukA

### 5.2.4.3 रचना की शिक्षण विधियाँ

1½ **fp=&y[ku fof/k** & bl fof/k e v/;kid Nk=k dk l;] o{k] Qy] i'i] bR;kfn dk fp= fn[kkdj i"u djrk gA mu i"uk dk mRrj Nk= i.k okD;k e nu dk i;Ru djrk gA

2½ **i"ukRrj fof/k** & bl fof/k e v/;kid Nk=k d vuHko lcfUkr fo'k;k l i"u iNrk gA Nk= viu vuHko l ,o dYiuk l y?k&y?k okD;k d lkFk "k) Li'V "kCnk l mRrj fy[krk g ,o v/;kid mld okD; ljpukRed =fV;k e l/kkj djrk gA

3½ **"kU; LFkku ifrfof/k** & bl fof/k e v/;kid Nk=k d lEe[k fjDr LFkku ;Dr okD; vFkok vuPNn miLFkku djrk gA ftu "kU; LFkkuk dk db fodYi "kCnk l i.k fd;k tk ldrk gA Nk= viu "kCn "kfDr d lgk;rk l "kU; LFkkuk dk Hkjrk g vkj okD; i.k djrk gA

4½ **"kCn ifjoru fof/k** & bl fof/k e v/;kid ,l dN okD; vFkok vuPNnk dk iLrr djrk g ftle db "kCn v/kk j[kkfdr gkr gA Nk=k dk v/kkj[kkfdr "kCnk d txg fdlh uru "kCn dk i;kx djuk gkrk g vkj viu fopkjk] Lefr ,o "kCn "kfDr d }kjk mu "kCnk d txg uru "kCn fy[krk gA

5½ **i"u jpuk fof/k** & bl fof/k e v/;kid mRrjkRed okD; ,o vuPNnk dk miLFkkiu djrk g ,o vuPNn l vyx&vyx idkj d i"u fuek.k dju d fun"k nrk gA Nk= viu i"ukRed {kerk l db lkj i"u fuek.k djr gA

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. रचना का स्वरूप बताइए ?

2. रचना शिक्षण का उद्देश्य बताइए ?

---

## 5.2.5 व्याकरण का शिक्षण

**iLrkouk**

किlh Hkh Hkk'kk e 0;kdj.k dk LFkku egRoi.k gkrk gA Hkk'kk vkj 0;kdj.k ,d nlj l ---- gA Hkk'kk dk foHkk'kk dh nf'V l Hkh 0;kdj.k dk fo"k'k egRo gA vr% Hkk'kk e ifjiDork ikIr dju d fy, 0;kdj.k f"k{k.k dh vko";drk gA

### 5.2.5.1व्याकरण का स्वरूप

0;kdj.k "kCn 0;k] vk] milx] d] /kkr] _ iR;; l curk gA ftldk vFk ^^0;kdR;Ur] oVikn;Ur "kCn vuu bfr0;kdj.k** ftld }kjk vFk Lo:i l "kCn fl) gkrk gA irtfy d "kCnk e ^^"kCnku"kklu gh 0;kdj.k gA*^
vFkkr ftld }kjk Hkk'kk dk 0;ofLFkr fd;k tkrk gA nk"kfudk u tk Hkk'kk d Lo:i] ljpuk rFkk dk;k dk Li'V djrk g mldk 0;kdj.k ---0;kdj.k e "kCn d Lo:i "kCnkFk lEcU/ku okD; ljpuk] vkfn nf'V l dk; fd;k tkrk gA 0;kdj.k e o.k] "kCn] okD;] o.kk dk mHkkj.k "kCnk d iR;; ,o milx] okD; e inØe ,o dkjd okD; dh fHkUUk&fHkUu fo/kk, vkfn rRok d Åij /;ku fn;k tkrk gA

### 5.2.5.2 व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य

1½ /ofu "kkL= dk le>u e Nk=k dk leFk cukukA
2½ "kCn ,o /kkrvk d fofHkUu :ik dk tkuu e leFk cukukA
3½ "k) okD; fuek.k dju dh ;kX;rk mRiUu djukA
4½ Nk=k e rd "kfDr] fujh{k.k] {kerk] dk fodkl djukA
5½ Hkk'kk lEcfU/kr x.k nk'kk dk le>u dh {kerk mRiUu djukA
6½ uru "kCnk dk fuek.k dju e leFk cukukA
7½ 0;kdj.k rRok dk Hkk'kk e i;kx dju dh {kerk fodflr djukA
8½ fof"k'V lkfgR;k dk vFkxg.k dju ;kX; cukukA
9½ mPpkj.k vkj y[ku d chp lEcU/k Lkkiku e leFk cukukA
10½ ,d Hkk'kk l nljh Hkk'kk e vuokn dju e leFk cukukA

### 5.2.5.2 व्याकरण शिक्षण का विधियाँ

¼1½ **ikB; iLrd i.kkyh&**
bl i.kkyh e 0;kdj.k iLrd dk lLoj iLrd okpu djk;k tkrk g ,o ikB;&iLrd dk vk/kkj cukdj fcuk le> l 0;kdj.k d fu;ek dk mifu;ek dk vH;kl djk;k tkrk gA ;g fof/k veukoKkfud gkrk gA bl fof/k dk ikjk;.k fof/k Hkh dgk tkrk gA
¼2½ **v0;kdfr i.kkyh&**
bl fof/k e 0;kdj.k e f"k{kk dh vyx egRo Lohdkj ugh fd;k tkrk vr% mRre 0;kdj.k fu'V jpukvk d v/;kiu l gh 0;kdj.k fl[kk;k tkrk gA D;kfd mRre jpukvk d v/;;u l Hkk'kk ij vf/kdkj ik;k tk ldrk gA ;g fof/k NkVh d{kkvk d fy, fujFkd fl) gkxkA
¼3½ **fuxeu fof/k&**
bl i)fr e iFker% 0;kdj.k d fu;ek dk Li'V fd;k tkrk g] rRi"pkr fu;ek dk mnkgj.k d lgk;rk l if'V dh tkrh gA vFkkr fu;ek dk vFkok fl)kUrk dk 0;ogkj e mi;kx lEcfU/kr Kku fn;k tkrk gA ;g i)fr lkekU; l fo"k'k dh vkj f"k{k.k l= ij vk/kkfjr gA ijUr ;g i.kkyh Åph d{kkvk d fy, ;kX; gkrh gA
¼4½ **vkxeu i)fr&**
;g i)fr mnkgj.kk l l=k dh vkj f"k{k.k l= d Åij vk/kkfjr gA blfof/k e iFker% mnkgj.kk dk miLFkkiu fd;k tkrk gA rRi"pkr mnkgj.kk d fo"y'k.k l lkekU; x.k /kek dk ,d=hdj.k fd;k tkrk gA lkekU; x.k /kek dk lkekU;hdj.k l fl)kUrk vFkok fu;e dk fu/kkj.k fd;k tkrk gA ,d fu/kkfjr fu;e dk ikB;&iLrdk e fyf[kr fl)kUrk d lkFk leUo; fd;k tkrk gA ;g fof/k fuxeu fof/k d foijhr fof/k gA

**अपनी प्रगति की जाँच – 1**

1. व्याकरण का स्वरूप बताइए ?

2. व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य बताइए ?

---

## 5.3 सारांश

किसी साहित्य के अंतर्गत विविध विधाओं का समावेश देखा जा सकता है।हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में गद्य, पद्य, नाटक, कहानी, कथा, रचना आदि आते हैं । उन विधाओं को सीखने के लिए विशिष्ट विधियाँ भी हैं | गद्य के लिए vuokn i)fr, vFk dFku i)fr, 0;k[;k fof/k, fo"y'k.k fof/k, l;Dr foधियाँ आदि विधियाँ, पद्य के लिए xhr rFkk vfHku; i.kkyh, vFkck/k i.kkyh, 0;k[;k i.kkyh, [k.Mkuo; i.kkyh, 0;kl i.kkyh, नाटक के लिए 0;k[;k i.kkली, vkn"k ukV; i.kkyh, jxep i.kkyh, d{kk vfHku; i.kkyh, व्याकरण के लिए ikB; iLrd i.kkyh, v0;kdfr i.kkyh, fuxeu fof/k, vkxeu i)fr एवंरचना के लिए fp=&y[ku fof/k, i"ukRrj fof/k, "kU; LFkku ifrfof/k, "kCn iरिoru fof/k, i"ujpuk fof/k उपयुक्त मानी जाती है |

## 5.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच –

उत्तर- अध्याय 4.2 देखे |

## 5.5 शब्दावली

**ग| शिक्षण -**

ग| शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान, अर्थ बोध, शब्द भंडार वृद्धि में सहायता पहुँचाना मुखर्जी

**पाठ्य पुस्तक विधि :**

"पाठ्यपुस्तक विधि शिक्षण की वह प्रक्रिया है, जिसका तत्कालीन उद्देश्य पाठ्यपुस्तक में निहित सूचनाओं की समझदारी प्रदान करना होता है|"

- **वेस्ले ई. बी.**

**व्याख्यान विधि :**

बड़ी कक्षाओं में प्रयोग की जाने वाले पद्धति व्याख्यान एक व्यावहारिक विधि है |"

- **बाईनिंग एवं बाईनिंग**

**अभिनय विधि :**

"अभिनय का अर्थ अतीत या वर्तमान की किसी स्थिति को क्रिया और जीवन देना है |इसका प्रयोग जिस विधि में किया जाता है, उस विधि को नाट्य रूपांतरण या भूमिका अभिनय विधि कहा जाता है|"

## 5.6 कार्य आवंटन

1) व्याकरण शिक्षण की विधियों को स्पष्ट कीजिए |

2) छात्र का रचनात्मक विकास में प्रभावी उपाय स्पष्ट कीजिए||

## 5.7 क्रियाएँ

1) गद्य शिक्षण की विभिन्न विधियों की उपयोगिता का वर्णन कीजिए|

2) नाटक शिक्षण की भाषा शिक्षण में भूमिका बताइए|

## 5.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)

1) व्याकरण शिक्षण के आगमन निगमन विधियों का तुलना करें |

2) रचना शिक्षण में गद्य शिक्षण की भूमिका स्पष्ट कर

## 5.9 संदर्भ पुस्तकें


- सक्सेना, राधारानी, (2013),"नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी |
- गुप्त, मनोरमा – भाषा अधिगम, केंद्रीय हिंदी संस्थान,आगरा
- गुनानंद- हिंदी भाषा का उद्भव और विकास, विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा
- चतुर्वेदी आचार्य सीताराम- भाषा कि शिक्षा, हिंदी साहित्य कुटीर, वाराणासी

- तिवारी, भोलानाथ –हिंदी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद
- द्विवेदी, देवीशंकर – भाषा और भाषिकी, भाषा-विज्ञान-विभाग,सागर वि.वि , सागर
- पांडेय, रामाशकल –हिंदी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- चतुर्वेदी, शिखा – हिंदी शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा शास्त्र की भूमिका
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा विज्ञानं की भूमिका,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली